# केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

## न्यायमूर्ति श्री. एम. आर. हरिहरन नायर अभिनंदन विशेषांक

जून 2026 वर्ष 26 नं 79

डी-1, लक्ष्मी नगर, पद्मश्री.डॉ. एन. चन्दशेखरन नायर रोड, पट्टम पालस पी.ओ., तिरुवनन्तपुरम - 695004

जस्टिस श्री एम.आर. हरिहरन नायर कानून के क्षेत्र में मळ्ळूर गोविंद पिल्लई गोल्ड मेडल स्वीकार करते हुए।

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर जी के 93 वें जन्मदिन पर

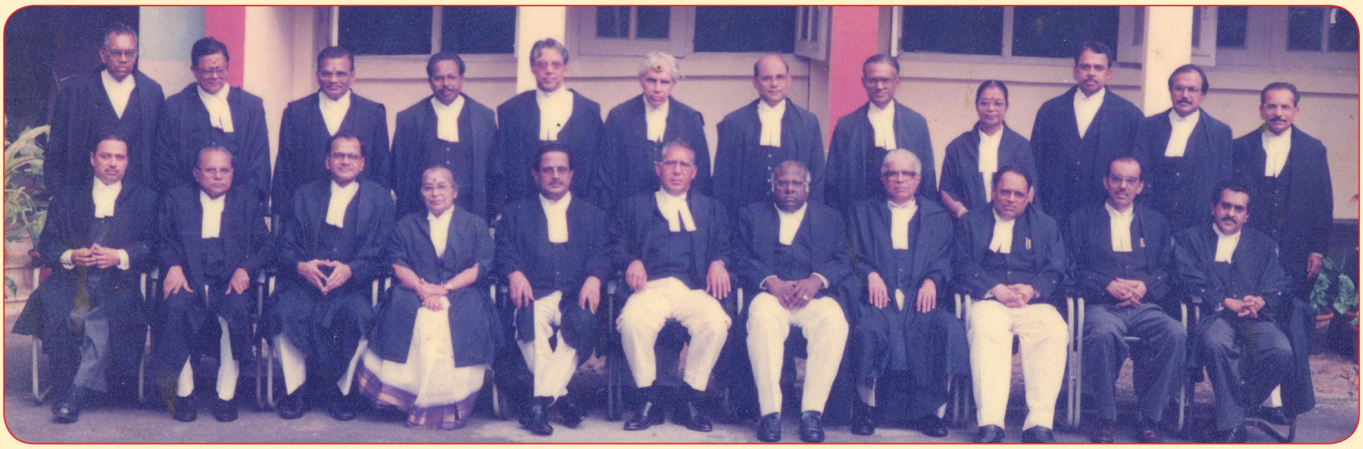

1999 में केरल हाई कोर्ट के जज के तौर पर

MG कॉलेज त्रिवेंद्रम में फ़िज़िक्स के छात्रों (1958-61 बैच) का एलुमनाई मीट - 6.11.2011

1975 में सहकर्मियों द्वारा दी गई बिदाई के अवसर पर

केरला इन्टरनैषणल सेन्टर पुरस्कार न्यायमूर्ति श्री. एम.आर. हरिहरन नायर को देते हुए भारत के पूर्व राजदूत श्री. टी.पी.श्रीनिवासन

# केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

## न्यायमूर्ति श्री. एम. आर. हरिहरन नायर अभिनंदन विशेषांक

जून 2026 वर्ष 26 नं 79

डी-1, लक्ष्मी नगर, पद्मश्री. डॉ. एन. चन्दशेखरन नायर रोड, पट्टम पालस पी.ओ., तिरुवनन्तपुरम - 695004

Keralahindisahityaacademy.com www.drchandrasekharannair.in



**पीयर रिव्यू समिति**
प्रो. (डॉ.) जी. गोपीनााथन
प्रो. (डॉ.) एन. रवीन्द्रनााथ
प्रो. (डॉ.) आर. शशिधरन

**संस्थाापक सम्पाादक**
पद्मश्री. डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर

**संरक्षक**
जस्टिस एम. आर. हरिहरन नायर

**मुख्य सम्पाादक**
प्रो. (डॉ.) एस. तंकमणि अम्माा

**सम्पाादक**
प्रो. (डॉ.) सी.जे. प्रसन्नकुमारी

**प्रबंध सम्पादक**
डॉ. एस. सुनंदा

**सम्पादक मंडल**
प्रो. (डॉ.) पी.जे. शिवकुमाार
प्रो. (डॉ.) एम.एस. विनयचन्द्रन
प्रो. (डॉ.) एस. लीलाकुमाारी अम्मा
प्रो. (डॉ.) के. श्रीलताा
डॉ. रम्या जी.एस. नायर



**सम्पादकीय कार्यालय**
केरल हिन्दी साहित्य अकादमी,
श्रीनिकेतन, डी-1, लक्ष्मीनगर,
पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर रोड
पट्टम पाालस पोस्ट,
तिरुवनन्तपुरम - 695 004

**प्रकाशकीय कार्यालय**
मुद्रित (द्वारा)
डॉ. एस. सुनन्दाा, महासचिव,
केरल हिन्दी साहित्य अकादमी
श्रीनिकेतन, डी-1, लक्ष्मीनगर,
तिरुवनन्तपुरम - 695 004
मो: 8800095639

मूल्य-एक प्रति : ₹ 50/-
आजीवन सदस्यता : ₹ 1000/-
संरक्षक : ₹ 2000/-



*केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।*


# इस अंक में


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | डॉ. सी. जे. प्रसन्नकुमारी | संपादकीय | 2 |
| 2 | पद्मश्री अश्वति तिरुनाल गौरी लक्ष्मी बाई | संदेश | 4 |
| 3 | डॉ.जस्टिस अरिजीत पसायत | संदेश | 4 |
| 4 | पद्मश्री प्रो.(डॉ) रवीन्द्र कुमार | बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी न्यायमूर्ति श्री हरिहरन नायर | 6 |
| 5 | न्यायमूर्ति के. सुकुमारन | एक पर्यावरण-प्रेमी न्यायविद् | 8 |
| 6 | प्रो.(डॉ) मोहनन कुन्नुम्मल | नैतिकता समिति के न्यायनिष्ठ अध्यक्ष न्यायमूर्ति एम.आर. हरिहरन नायर | 10 |
| 7 | डॉ. एन. राधाकृष्णन | एक विवाद-मुक्त समाज के निर्माण हेतु न्यायमूर्ति श्री.एम.आर.हरिहरन नायर का अथक प्रयास | 11 |
| 8 | न्यायमूर्ति आर. बसंत | शताभिषेक के अवसर पर प्रिय भ्राता न्यायमूर्ति एम.आर.हरिहरन नायर को शुभकामनाएँ | 13 |
| 9 | न्यायमूर्ति के. अब्रहाम मैथ्यू | ईमानदारी एवं निष्पक्षता की प्रतिमूर्ति न्यायाधीश एम.आर.हरिहरन नायर | 15 |
| 10 | श्री.टी.पी. श्रीनिवासन (पूर्व राजदूत) | एक मित्र का सप्रेम वंदन | 16 |
| 11 | श्री.एस.एम. विजयानंद, आई.ए.एस (सेवानिवृत्त) | न्यायमूर्ति हरिहरन नायर | 17 |
| 12 | प्रो.(डॉ). जॉर्ज ओणक्कूर | न्याय-पथ पर एक सौम्य उपस्थिति | 19 |
| 13 | श्री के. रामन पिल्लै | न्यायमूर्ति हरिहरन नायर के परिवार के संबंध में | 20 |
| 14 | डॉ पी.एन. विजयकुमार (ज़िला न्यायाधीश सेवानिवृत्त) | न्याय-निष्पादन का मूर्तिमान रूप - जस्टिस एम.आर.हरिहरन नायर | 26 |
| 15 | डॉ. जैकब पुलिक्कन | न्यायमूर्ति एम. आर. हरिहरन नायर : गांधीवाद को नई दिशा और व्यावहारिकता प्रदान करने वाले कर्मयोगी | 28 |
| 16 | प्रो.(डॉ). एस. तंकमणि अम्मा | न्यायमूर्ति एम.आर.हरिहरन नायर जी : मानवीयता की प्रतिमूर्ति | 30 |
| 17 | डॉ. आशा देशमुख | अप्पा एम.आर. हरिहरन नायर | 32 |
| 18 | डॉ. एस. सुनंदा | न्याय, मानवता और लोकसेवा केलिए समर्पित व्यक्तित्व - माननीय न्यायमूर्ति श्री एम.आर. हरिहरन नायर | 33 |
| 19 | न्यायमूर्ति एम.आर. हरिहरन नायर<br>अनुवाद – डॉ. सी. जे. प्रसन्नकुमारी | आभार (कविता) | 35 |
| 20 | न्यायमूर्ति एम.आर. हरिहरन नायर : जीवन रेखा | | 36 |

# संपादकीय

'केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका' का "न्यायमूर्ति एम.आर.हरिहरन नायर अभिनंदन विशेषांक" प्रकाशित हो रहा है। अकादमी और पत्रिका स्वयं गौरवान्वित है कि शताभिषेक की संतृप्ति में विराजित नायर जी जैसे न्यायिक, विधि क्षेत्र के महामेरु पर अभिनंदन अंक निकालने का विशेष सौभाग्य प्राप्त हुआ है। विश्वास है कि केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के संरक्षक नायर जी के सार्वजनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के रंगीन फूलों से अलंकृत यह रंगोली पाठक-पाठिकाओं केलिए अनंददायिनी होगी, सूचनात्मक होगी। पत्रिका में नायर जी के न्यायिक एवं सार्वजनिक क्षेत्र के सहकर्मियों द्वारा लिखे आलेखों के साथ पद्म श्री अश्वति तिरुनाळ् गौरी लक्ष्मी बाई तंपुराट्टी के और भारत के उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायमूर्ति अरिजीत पसायत के संदेश संलग्न हैं, साथ-साथ नायर जी की एक कविता, संक्षिप्त जीवन परिचय और समय-समय में उनके जीवन में घटित महत्वपूर्ण क्षणों को साकार करनेवाले चित्रों से सुसज्जित है यह विशेषांक।

पद्मश्री प्रो.डॉ.रवींद्रकुमार अपने आलेख में ईशोपनिषद का उद्धरण देकर न्यायपालिका से सेवानिवृत्ति के बाद विभिन्न आयोगों के अध्यक्ष, लोकपाल, सदाचार समिति प्रमुख के रूप में नायर जी की सेवा का उल्लेख करके एक दूसरे तल की ओर पाठकों को ले जाते हैं। बुजुर्ग न्यायमूर्ति के. सुकुमारन ने नायरजी के पर्यावरण प्रेम का अंकन करके अपने आलेख को एक नूतन अलग जानकारी से समृद्ध किया है। केरल विश्वविद्यालय के सम्माननीय कुलपति डॉ.मोहनन कुन्नुम्मल ने 'स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय' की नैतिकता समिति के अध्यक्ष के रूप में उनकी सेवा को रेखांकित करते हुए उनकी एक अलग कार्यप्रणाली को दर्शाकर नायर जी के प्रति अपना आदर प्रकट किया है तो डॉ. एन.राधाकृष्णन ने एक भिन्न पहल यानि गाँधीवादी विचारों को सुदृढ़ बनाने के उनके विशेष प्रयास की सराहना की है। न्यायमूर्ति आर.बसंत ने अपने आलेख में शताभिषिक्त एम.आर.हरिहरन नायर जी से पिछले चार दशकों के परिचय का ज़िक्र करते हुए दोस्ती और संबंधों को संजोने की उनकी अप्रतिम क्षमता को अनुकरणीय पाठ कहा है। केरल के उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश के.अब्रहाम मैथ्यू ने अपने आलेख में ऊपर से नीचे तक के कर्मचारियों में सामंजस्य स्थापित करनेवाले और अदालत के अंदर-बाहर अनुशासन बनाए रखनेवाले जादूगर नायर जी के संबंध में बताया है तो नायर जी को हरि कहकर पुकारनेवाले भारत के पूर्व राजदूत श्री. टी.पी.श्रीनिवासन ने उन्हें सप्रेम अभिनंदन करके अपने चिरकाल परिचय की निरंतरता और उस परिचय के बलबूते पर, डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर से मुलाकात एवं आत्मीयता को बुलंद करके विशेषांक की शोभा बढ़ाई है। केरल सरकार का पूर्व मुख्य सचिव श्री एम.एस.विजयानंद आई ए एस केरल में ओंबुड्समैन संस्था की स्थापना एवं नायर जी द्वारा लोकपाल पद की ज़िम्मेदारी को बखूबी निभाने का सविस्तार वर्णन दिया है। केरल के महान साहित्यक डॉ.जॉर्ज ओणक्कूर ने बच्चों की प्रगति के प्रति प्रतिज्ञाबद्ध नायर जी के कर्मकांड को महत्व दिया है। भाजपा के बुजुर्ग नेता श्री के.रामन पिळ्ळै ने वेळ्ळायणी की रूपसी प्रकृति एवं नायर जी की कौटुंबिक परंपरा के वर्णन के साथ एक नाटकीयता संपन्न लेख लिखकर उनके प्रति अपनी प्यार ममता को अंकित किया है तो सेवानिवृत्त जिला न्यायाधीश श्री पी.एन.विजयकुमार

ने जिला न्यायाधीश के रूप में नायर जी के प्रमुख निर्णयों का स्मरण किया है। गाँधी ग्रामीण विकास केंद्र के निदेशक डॉ.जेकब पुळिक्कन ने अपने लेख में गाँधी अध्ययन केंद्र की बहुआयामी गतिविधियों का एवं जनकीय न्याय सभा में सत्य और न्याय के पथ के अगुवा न्यायमूर्ति नायर जी के योगदान एवं विशिष्ट कार्यशैली की प्रशंसा की है।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी की अध्यक्षा डॉ.एस.तंकमणि अम्मा जी का आलेख न्यायिक सार्वजनिक क्षेत्र में उनका योगदान, इसी क्षेत्र में उनके द्वारा प्रणीत किताबों एवं संरक्षक के रूप में अकादमी की प्रगति पर उनकी देन की चर्चा से संपन्न है। एम.आर.हरिहरन नायर जी और पत्नी को अप्पा और अम्मा पुकारनेवाली आशा देशमुख का लेख नायर जी की सामाजिक ज़िम्मेदारी का निदर्शन है, न्यायिक क्षेत्र के उत्कृष्ट अवगाहन की झलक भी उसमें प्रस्तुत है। केरल हिंदी साहित्य अकादमी के महासचिव डॉ.सुनंदा ने अपने पिता एवं केरल हिंदी साहित्य अकादमी के संस्थपक अध्यक्ष डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर जी के शिष्य न्यायमूर्ति नायर जी के एम.जी कॉलेज का छात्र जीवन, केरल हिंदी साहित्य अकादमी से संबंध, संरक्षक के रूप में उनकी सेवा, न्यायिक क्षेत्र में उनकी साहसिकता, निष्पक्षता एवं मानवीय संवेदना का सविस्तार साझा किया है। सफल न्यायाधीश नायर जी के संबंध में विभिन्न क्षेत्रों को अलंकृत करनेवाले दिग्गज कार्यकर्ताओं द्वारा लिखे आलेख तो नायर जी के सामाजिक, न्यायिक जीवन की गरिमा और महिमा के उद्घाटन में सर्वाधिक सक्षम हैं। नायर जी के विभिन्न क्षेत्रों के कार्यकलाप से एकदम अनभिज्ञ लोगों केलिए यह विशेषांक उनकी विद्वता, न्यायबोध, विनम्रता, सादगी, मानवीयता, मानवता एवं मूल्यबोध का परिचायक होगा।

न्यायमूर्ति नायर जी के शताभिषेक के इस शुभ अवसर पर सर्वेश्वर से विनती है कि पारस्परिक सहयोग को महत्व देनेवाला न्यायिक क्षेत्र का यह विशाल समुंदर, सार्वजनिक क्षेत्र का यह आकाशधर्मी व्यक्तित्व, विनम्रता, मानवीयता की यह प्रतिमूर्ति, न्यायमूर्ति एम.आर.हरिहरन नायर दीर्घायू रहे, जगत् नियंता उन्हें दीर्घायू दे ताकि केरल की ज़रूरतमंद आम जनता उनके न्यायिक अवगाहन का, सेवा भाव का फायदा उठावे। एक विशाल छत्तनार वट वृक्ष जैसे विस्तारित प्रखर प्रतिभा, मेधावाले नायर जी का सार्वजनिक जीवन आगे भी शाखाएँ-उपशाखाएँ फैलाकर पल्लवित पुष्पित होकर सारे विश्व में अपनी मानवता, दया, करुणा, सेवा की दिगंतव्यापी शीतल छाया प्रदान करें। उनका पारिवारिक जीवन सुख शांति से समृद्ध रहे। इसी प्रार्थना के साथ यह विशेषांक सुधी पाठक-पाठिकाओं के सामने समर्पित है।

इस महान कर्मयोगी का चरणस्पर्श।

बहुमूल्य प्रतिक्रिया एवं सुझाव का स्वागत।


**डॉ.सी.जे. प्रसन्नकुमारी**
**पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष,**
**सरकारी महिला कॉलेज**
**तिरुवनंतपुरम**

न्यायमूर्ति श्री. एम.आर. हरिहरन नायर NIAS, बैंगलूर के सेमिनार में भाग लेते हुए

# संदेश

माननीय न्यायमूर्ति श्री. एम. आर. हरिहरन नायर एक ऐसे विरल व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता, सत्यनिष्ठा और निःस्वार्थ सेवा-भाव से न्यायिक तथा सार्वजनिक क्षेत्र को गौरवान्वित किया है। न्यायपालिका तथा सामाजिक सौहार्द के क्षेत्र में उनका योगदान वास्तव में अतुलनीय है।

उनके 85वें जन्मदिवस के इस शुभ अवसर पर मैं उन्हें अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ तथा ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वे उन्हें उत्तम स्वास्थ्य, सुख और समाज-सेवा के अनेक, सार्थक वर्षों का आशीर्वाद प्रदान करें।

जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

**गौरी लक्ष्मी बाई**

**Princess Padma Shri Dr. Aswathy Thirunal Gouri Lakshmi Bayi**

अंग्रेज़ी से अनूदित

Dr. Justice Arijit Pasayat
Judge
Supreme Court of India (Retd.)

B-98, Sector - 27,
Distt. Gautam Buddha Nagar
Noida - 201301, U.P.
Ph.: 0120-4352287, 2544097, 2544098
Mob.: 9971090200
E-mail: apasayat@gmail.com

## संदेश

प्रिय श्री न्यायमूर्ति एम.आर.हरिहरन नायर के बारे में लिखते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है जो उस समय मेरे सहयोगी थे जब मैं केरल उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश था। मैं उनसे पहली बार 20 सितंबर 1999 को मिला, जब मुख्य न्यायाधीश के रूप में मेरे शपथ लेने के एक दिन पहले वे अन्य न्यायाधीश साथियों के साथ मेरा स्वागत करने आए थे। यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि उनका शारीरिक स्वरूप मेरे एक चचेरे भाई (समरजीत पसायत) से बहुत मिलता-जुलता है। जब मैंने उनसे यह बात कही तो वे खुलकर हँस पड़े।

भाई हरिहरन एक आदर्श न्यायाधीश होने के साथ-साथ एक बेहत्तरीन इंसान भी हैं ; यह एक दुर्लभ संयोग है। केरल में अपने प्रवास के दौरान तथा उसके पश्चात भी, मैंने उन्हें कभी मुस्कान रहित नहीं देखा। उनके चेहरे की यह सदैव विद्यमान मुस्कान उनके उच्च चरित्र, उदात्त विचार एवं संवेदनशील हृदय का प्रतीक है। यह तथ्य कि वे शासकीय दायित्वों सहित विविध गतिविधियों में निरंतर सक्रिय और व्यस्त रहे हैं, इस बात का प्रमाण है कि समाज तथा विशेष रूप से केरल की जनता के कल्याण के प्रति उनकी निष्ठा, समर्पण और प्रतिबद्धता पर सभी संबंधित व्यक्तियों को गहरा विश्वास है।

हमारा आपसी प्रेम और स्नेह इस बात से भी झलकता है कि हम एक-दूसरे को अपने-अपने जन्मदिन पर शुभकामनाएँ देते हैं - मेरा जन्मदिन 10 मई को और उनका 11 मई को होता है। वे मकर संक्रांति से पहले और भगवान अय्यप्पन के दर्शन के लिए मेरी वार्षिक शबरिमला यात्रा के अवसर पर मुझे शुभकामनाएँ देना कभी नहीं भूलते।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी को उनके 85वें जन्मदिन पर "शोध-पत्रिका अभिनंदन विशेषांक" के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। भाई हरिहरन नायर को उनके 85वें जन्मदिन की अग्रिम शुभकामनाएँ। मैं उस दिन भी उन्हें पुनः शुभकामनाएँ दूँगा।

**(Dr. Justice Arijit Pasayat)**
**Former Judge Supreme Court of India**

अंग्रेज़ी से अनूदित

# बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी न्यायमूर्ति श्री हरिहरन नायर

**पद्मश्री प्रोफेसर (डॉ.) रवीन्द्र कुमार**

ईशोपनिषद् के द्वितीय श्लोक में मनुष्य से प्रबल कामना है कि 'वह एक सौ वर्षों तक कर्म करता हुआ जीने की इच्छा करे' ("कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः/एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे") के अनुसार पचासी वर्षों के कर्मयोगी न्यायमूर्ति श्री हरिहरन नायर का गौरवपूर्ण जीवन न केवल प्रेरणादायक है, अपितु अनुकरणीय भी है।

केरल प्रांत की राजधानी तिरुवनंतपुरम के मुट्टकाट में जन्मे न्यायमूर्ति नायर का 1967-2003 के मध्य का भारतीय न्याय व्यवस्था में कार्य और योगदान जिनमें आठ वर्षों का जनपद न्यायलय में अधिवक्ता के रूप में सक्रिय कार्य, तदुपरांत मुख्यतः जिला व सत्र न्यायाधीश व केरल उच्च न्यायलय में रजिस्ट्रार (विजिलेंस) एवं न्यायाधीश के उत्तरदायित्व-निर्वहन का काल भी सम्मिलित है जो अपने आप में उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व का परिचायक है।

न्यायपालिका से सेवानिवृत्ति के उपरांत, केरल प्रान्त के कई आधिकारिक आयोगों के अध्यक्ष, संस्थाओं के लोकपाल और सदाचार समिति-प्रमुख के रूप में न्यायमूर्ति नायर ने उच्च मानवीय मूल्यों के साथ, सामाजिक कर्त्तव्य को सर्वोपरि रखकर, जिस प्रकार अपनी सेवाएँ दी हैं और अभी भी निरंतर दे रहे हैं, वह अपने आप में ज़्यादा महत्वपूर्ण है। अपने निर्णयों द्वारा सदाचार को कर्त्तव्यपरायणता से जोड़नेवाले न्यायमूर्ति नायर के जीवन और कार्य हमारी पीढ़ी विशेष रूप से आज के युवा वर्ग को बहुत कुछ सीखने व उनका अनुकरण करने की आवश्यकता है।

पिछले लगभग पंद्रह वर्षों से न्यायमूर्ति नायर से मेरा न केवल निकट परिचय है, अपितु एक मित्र, भाई और परिवार के ज्येष्ठ की भाँति संबंध भी है। इस संबंध ने उनके व्यक्तित्व को निकटता से जानने का मार्ग प्रशस्त किया, साथ ही, उनके गुणों से कुछ सीखने को प्रेरित भी किया। न्यायमूर्ति नायर के व्यक्तित्व के पाँच ऐसे विकसित गुण, जो अनेकों से पृथक करते हुए उन्हें विशिष्ट भी बनाते हैं, का उल्लेख करना चाहूँगा।

न्यायमूर्ति नायर का पहला गुण उनके द्वारा दृढ़ता के साथ अनुशासन का पालन करना है। दिनचर्या में संतुलित मात्रा में खान-पान की बात हो, संयम के साथ वार्तालाप की, कार्य के समय सावधानी की अथवा परस्पर व्यवहारों में स्पष्टः अपना पक्ष रखने की, सभी स्थानों पर न्यायमूर्ति नायर की दृढ़ अनुशासन की प्रतिबद्धता प्रकट होती है। यहाँ तक कि मार्ग में चलते व बात करते समय भी उनके इस गुण अनुभूत की जा सकती है। अनुशासन-पालन के मूल्य पर सामने वाले को प्रसन्न करना उनके आचरण में नहीं है। अनुशासन है, तो है।

नायरजी का दूसरा उल्लेखनीय गुण मितव्ययता है। मितव्ययता, कंजूसी नहीं होती। भारतीय परंपरा में धन, संसाधनों एवं समय का विवेक के साथ, नियंत्रित तथा आवश्यकता के अनुसार सदुपयोग करना, दूसरे शब्दों में अपव्यय से बचना ही मितव्ययता है। समाज के अग्रणियों ने अपने जीवन में सदा ही मितव्ययता को अपनाया और इसका सदुपयोग जन-कल्याणार्थ किया। कला के रूप में विकसित मितव्ययता न्यायमूर्ति नायर के जीवन का भी अंग है जो इसका महत्त्व बताता है, इसे अपनाने की हमें सीख देता है। यहाँ मैं यह भी उल्लेख करना चाहूँगा कि मितव्ययी नायर जी आतिथ्य सत्कार में बेजोड़ हैं।

उदारता व परस्पर सहयोग के धनी न्यायमूर्ति नायर, वैचारिक सामंजस्य का भी एक श्रेष्ठ उदाहरण है। हरेक व्यक्ति अपने जीवन में दृष्टिकोण सामंजस्य को स्थापित नहीं कर सकता। यह बहुत सरल कार्य नहीं है। किसी व्यक्ति के जीवन में यह विरले ही स्थापित होता है। लेकिन, जो इसे गुण के रूप में विकसित कर लेता है, वह व्यक्तिवाद से बहुत ऊपर उठ जाता है , समाज, राष्ट्र और मानवता के कल्याण के लिए योगदान करता है। समाज, राष्ट्र और मानवता के लिए कुछ करने की चाह रखने वाले किसी भी मनुष्य के लिए दृष्टिकोण सामंजस्य को एक प्रमुख गुण के रूप में विकसित करना भी आवश्यक होता है।

नायर जी ने अपने जीवन में इस गुण को एक बड़ी सीमा तक विकसित किया है।

न्यायमूर्ति हरिहरन जी विकासवादी दृष्टिकोण के पक्षधर हैं। नायरजी उस नए प्रयास हेतु, जो समय व परिस्थितियों की मांग के अनुसार कल्याणकारी हो, सदैव उद्यत रहते हैं। इसी के साथ, वे सदाबहार सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक मूल्यों और प्राचीन स्वस्थ भारतीय परम्पराओं के पोषक और अनुसरणकर्ता भी हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वांछित सुधारों के पक्षधर हैं। पूर्णतः आस्तिक व आशावान हैं। इस प्रकार, प्राचीन व नवीन का संगम उनके जीवन की गतिविधियों व व्यवहारों में विद्यमान है।

यही कारण है कि अतिप्राचीनकाल से चली आ रही भारतीय पंचायत व्यवस्था को नए परिवेश में, जिसमें किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना प्रत्येक की समानता के साथ, स्वतंत्रता की रक्षा व हरेक के नागरिक अधिकार सुरक्षित रहें; इससे भी आगे बढ़कर, कोई भी न्याय (सामाजिक व संस्थागत) से वंचित न हो, न्यायमूर्ति नायर केरल से देशभर में प्रस्तुत कर रहे हैं। इस परिवेश की एक विशिष्टता, इसके केंद्र में गाँधीवादी-दृष्टिकोण का होना है। गाँधीवादी-विचार, जैसा कि मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने कहा है, एक न्यायसंगत समाज के लिए आवश्यक हैं और यदि मानवता को आगे बढ़ना है तो गाँधी-विचार को अनदेखा नहीं किया जा सकता। मानवता, दूसरे शब्दों में, वृहद् मानव-कल्याण ही प्रमुख रूप से गाँधीवादी-विचार के केंद्र में है।

समालोचनात्मक और समय व परिस्थितियों की मांग के अनुसार आवश्यक परिमार्जन के साथ गाँधीवादी-विचार की प्रासंगिकता की स्वीकृति एवं इस हेतु जन-अपील नायर जी की वैचारिक परिपक्वता को दर्शाता है; उनकी परिपक्वता के गुण का परिचय कराती है। पचासी वर्ष की आयु में भी, स्पष्टता के साथ, इस संबंध में न्यायमूर्ति नायर द्वारा किया जाने वाला अथक प्रयास हमारे लिए गर्व का विषय है।

न्यायमूर्ति नायर के जीवन की उक्त पाँच प्रमुख विशिष्टताओं का मैंने स्वयं उनके सान्निध्य से, उनके लेखन कार्य तथा वार्ताओं द्वारा अनुभूत किया है। ऐसे व्यक्तित्व के धनी, मैं यह बारम्बार दोहरा सकता हूँ, विरले ही मिलेंगे। न्यायमूर्ति नायर द्वारा जीवन के पचासी वर्ष पूर्ण करने पर मैं उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। मैं कामना करता हूँ कि वे शतायु हों; स्वस्थ व सक्रिय रहकर समाज तथा देश के लिए अपना वह योगदान दें जो परमसत्ता ने उनके लिए निर्धारित किया है।

**पूर्व कुलपति,**
**टी.सी.एस. विश्वविद्यालय, मेरठ**
**लोकपाल (ओंबुड्समैन)**
**स्वामी विवेकांद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ,**
**उत्तरप्रदेश**

**11 जूलाई 2024 को विश्व शान्ति आंदोलन ट्रस्ट का 'शांति राजदूत पुरस्कार' ग्रहण करते हुए।**

# एक पर्यावरण–प्रेमी न्यायविद

**न्यायमूर्ति के. सुकुमारन**

न्यायमूर्ति हरिहरन नायर केरल उच्च न्यायालय के एक प्रतिष्ठित न्यायाधीश रहे हैं। उनके साथ मेरी आत्मीयता जिसे मैं आज भी स्नेहपूर्वक संजोए हुए हूँ, उस समय से प्रारम्भ होती है जब उन्होंने न्यायिक सेवा में एक अत्यंत संवेदनशील दायित्व- सी.बी.आई. न्यायालय-का कार्यभार संभाला था। उस अत्यंत उत्तरदायी पद पर उनके कार्यनिष्पादन ने सामान्य जनता के बीच व्यापक प्रशंसा प्राप्त की। केरल उच्च न्यायालय का इतिहास अत्यंत गौरवशाली रहा है। भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति वाई. वी. चंद्रचूड़ (वरिष्ठ) ने इसे भारत का सर्वश्रेष्ठ उच्च न्यायालय बताया था। ऐसी गौरवपूर्ण परंपरा, विद्वत्ता और न्यायिक उत्कृष्टता से समृद्ध न्यायालय में न्यायाधीश के रूप में कार्य करना स्वयं में एक महान उपलब्धि है।न्यायिक क्षेत्र की उनकी उत्कृष्ट सेवा ने उन्हें स्वाभाविक रूप से उच्च न्यायालय, केरल के न्याधीश पद तक पहुंचाया।

न्यायमूर्ति हरिहरन नायर ने अपनी निष्कलंक सत्यनिष्ठा तथा विधि के क्षेत्र के परे मानवीयता और सामाजिक विषयों के व्यापक ज्ञान के कारण विशिष्ट प्रतिष्ठा अर्जित की। इस यश और सम्मान के पीछे ठोस आधार था। वे जीवनपर्यन्त एक सतत विद्यार्थी बने रहे। यही कारण था कि न्यायिक दायित्वों के अत्यंत व्यस्त और सम्मानजनक कार्यकाल के दौरान भी उन्होंने पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने का साहसिक प्रयास किया। विधि के क्षेत्र में उनकी गहन विद्वत्ता उनके न्यायिक निर्णयों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। केरल उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में उनके सौ से अधिक निर्णय विधि-विवेचनात्मक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। वे निर्णय आज भी गंभीर अध्ययन और मनन के योग्य हैं।

मुझे यह जानकर विशेष प्रसन्नता हुई कि वे पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी अत्यंत समर्पित थे। उच्च न्यायालय,केरल में कार्य करते समय तथा पर्यावरणीय गतिविधियों में सक्रिय रहते हुए मुझे उनका निरंतर समर्थन और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। आज अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कोच्चि का 'मंगलवनम्' केवल एक पर्यावरणीय धरोहर ही नहीं, बल्कि शहर का सांस्कृतिक केंद्र भी बन चुका है। इसके संरक्षण और विकास में प्रोफेसर प्रसाद, वी. एस. विजयन, यू. के. गोपालन, डॉ. के. एस. पुरुषन तथा पी. ए. रामचन्द्रन जैसे अनेक समर्पित पर्यावरणविदों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में मैं भी उच्च न्यायालय के समीप स्थित उस हरित, रमणीय क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता से आकृष्ट हुआ था। राम मोहन पैलेस के रूप में निर्मित उस ऐतिहासिक भवन और उसके सुरम्य परिवेश ने मुझे सदैव आकर्षित किया। मुझे अत्यंत संतोष हुआ जब न्यायमूर्ति हरिहरन नायर ने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में मेरे योगदान को सराहा और उदारतापूर्वक उसकी प्रशंसा की। उनके द्वारा लिखित लेख आज प्रकाशित सामग्री के रूप में उपलब्ध हैं जो मंगलवनम् के विकास और विस्तार के इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं।

पर्यावरण संबंधी गतिविधियों में उनकी रुचि बाद के वर्षों में और अधिक प्रबल हुई। मलयालम साहित्य में उनके अनेक मूल्यवान लेख भी प्रकाशित हुए, जिनमें अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर विचार व्यक्त किए गए हैं।

न्यायाधीश और जागरूक सार्वजनिक चिंतक के रूप में न्यायमूर्ति हरिहरन नायर की प्रतिष्ठा को अंतरराष्ट्रीय स्तर की संस्था-श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान— ने भी मान्यता प्रदान की। इस संस्थान की स्थापना डॉ. एम. एस. वालियत्तान ने की थी। टोक्यो सम्मेलन के निर्देशों के अनुसार गठित नैतिकता समिति (एथिक्स कमेटी) का गठन करने वाला यह भारत का पहला संस्थान था। मुझे इस समिति का प्रथम अध्यक्ष बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यद्यपि यह चिकित्सा क्षेत्र से संबंधित समिति थी तथापि टोक्यो सम्मेलन के अनुसार उसका अध्यक्ष एक विधिवेता होना आवश्यक था। न्यायमूर्ति हरिहरन नायर ने लगभग दस वर्षों तक इस महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहण किया। यह मानवता और समाज के लिए उनके असाधारण योगदान का प्रमाण है।

वे अपनी साहित्यिक सृजनशीलता के लिए भी व्यापक रूप से सम्मानित हैं। 'एनोटेटेड लीगल रिपोर्टिंग ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित 'नियम समीक्षा' पत्रिका में उनके अनेक लेख प्रकाशित हुए। वे न्यायमूर्ति वी. आर. कृष्ण अय्यर, न्यायमूर्ति पी. सुब्रमण्यम पोट्टी, न्यायमूर्ति जानकी अम्मा तथा न्यायमूर्ति टी. चन्द्रशेखर मेनन जैसे प्रतिष्ठित विधिवेताओं की परंपरा से जुड़े रहे।

भारतीय लेखक समाज (INSA) के केरल चैप्टर का अध्यक्ष होने के नाते मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई जब हमारी पत्रिका 'नवनीतम्' में न्यायमूर्ति हरिहरन नायर के विद्वत्तापूर्ण लेख प्रकाशित हुए। उनके लेखों का संकलन निस्संदेह पाठकों को एक महान चिंतक के विचारों से परिचित कराने वाला उत्कृष्ट ग्रंथ सिद्ध होगा।

सेवानिवृत्ति के पश्चात भी न्यायमूर्ति हरिहरन नायर ने विश्राम का जीवन नहीं चुना। उन्होंने केरल राज्य में अनेक आयोगों और समितियों का नेतृत्व करते हुए समाज के प्रति अपनी सेवाएँ निरंतर जारी रखीं। उनके इन कार्यों ने केरल के सांस्कृतिक और सार्वजनिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है।

वे 'लाइसियम' (LYCEUM) नामक संस्था के सक्रिय सदस्य हैं जो केरल के पूर्व न्यायाधीशों का एक प्रतिष्ठित मंच है। एर्नाकुलम में आयोजित इसकी बैठकों में भाग लेने के लिए वे नियमित रूप से समय निकालते हैं। मुझे सुखद आश्चर्य हुआ जब भारतीय लेखक समाज द्वारा मेरी पुस्तक 'इन द हाई कोर्ट एट बॉम्बे' के लोकार्पण समारोह में उन्हें श्रोताओं के बीच उपस्थित पाया।

जब कोई व्यक्ति छियानबे वर्ष की आयु में अपने अतीत की ओर देखता है तो अनेक स्मृतियाँ धुंधली हो सकती हैं। किंतु कुछ प्रकाशस्तंभ और कुछ विशिष्ट मील के पत्थर सदैव स्पष्ट और उज्ज्वल बने रहते हैं। न्यायमूर्ति एम. आर. हरिहरन नायर मेरे लिए ऐसे ही एक प्रकाशस्तंभ और ऐसे ही एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व हैं।

उनकी विद्वत्ता और चिंतनशीलता के प्रमाणस्वरूप उनके निम्नलिखित लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—

1. "भरणकार्यंगलिल अरियानुल्ल अवकाशम्" (प्रशासनिक कार्यों में जानकारी का अधिकार), नियम समीक्षा, पुस्तक 9, अंक 38-39, वर्ष 2005।
2. "लोक अदालत : न्याय क्षेत्र में एक प्रयोग", नियम समीक्षा, पुस्तक 4, अंक 14-15, वर्ष 2000।
3. "मलयाली का ओणम और संविधान", नवनीतम्, सितम्बर 2020, पुस्तक 7, अंक 6।

**पूर्व न्यायाधीश**
**बंबई उच्च न्यायालय,**
**केरल उच्च न्यायालय**

अंग्रेज़ी से अनूदित

हाई कोर्ट के जज के तौर पर शपथ लेते हुए

2011 में हाई कोर्ट के सहकर्मी जजों के साथ

# नैतिकता समिति के न्यायनिष्ठ अध्यक्ष न्यायमूर्ति एम.आर. हरिहन नायर

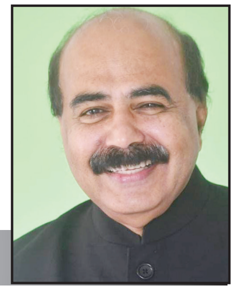

**प्रो. (डॉ.) मोहनन कुन्नुम्मल**

मुझे न्यायमूर्ति श्री एम.आर. हरिहरन नायर सर को निकट से जानने का अवसर केरल स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय की नैतिकता समिति (एथिक्स कमेटी) के अध्यक्ष के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान प्राप्त हुआ। यह समिति Indian Council of Medical Research (आईसीएमआर) के दिशा-निर्देशों के अंतर्गत कार्य करने वाली एक स्वतंत्र संस्था है। किसी भी शोध परियोजना में यह सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक होता है कि प्रस्तावित अनुसंधान एवं परीक्षण पूर्णतः नैतिक मूल्यों और मानकों के अनुरूप हों। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस समिति की स्थापना की गई है और इसलिए स्वास्थ्य के क्षेत्र में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आज केरल स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय की सभी शोध परियोजनाएँ उत्कृष्ट स्तर पर संचालित हो रही हैं। इसके पीछे सबसे बड़ा योगदान और मार्गदर्शन न्यायमूर्ति हरिहरन नायर सर का है जो विश्वविद्यालय की स्थापना काल से ही इसके विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यो का नेतृत्व करते आए हैं। नैतिकता समिति के अध्यक्ष होने के अतिरिक्त, उन्होंने विश्वविद्यालय के विभिन्न अधिनियमों एवं विनियमों (स्टैच्यूट्स) के पुनरीक्षण हेतु गठित समिति के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। विश्वविद्यालय की परीक्षा प्रणाली से संबंधित दिशा-निर्देशों (एग्जामिनेशन मैनुअल) को तैयार करने वाली समिति का नेतृत्व भी उन्होंने किया। इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालय के दीर्घकालिक विकास हेतु तैयार की गई महत्वपूर्ण "परिप्रेक्ष्य योजना" (Perspective Plan) निर्माण समिति के अध्यक्ष पद का दायित्व भी उन्होंने सफलतापूर्वक निभाया।

आज विश्वविद्यालय अत्यंत पारदर्शी, व्यवस्थित और दक्षतापूर्वक कार्य कर रहा है। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि अब तक विश्वविद्यालय के विरुद्ध कोई गंभीर शिकायत सामने नहीं आई है। इसका मुख्य कारण स्पष्ट नियमों का निर्माण तथा उनका कठोर और निष्पक्ष अनुपालन है। ऐसे विधिक और प्रशासनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण दस्तावेजों के निर्माण के पीछे न्यायमूर्ति हरिहरन नायर सर की दूरदर्शी नेतृत्व क्षमता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विश्वविद्यालय के सभी प्रमुख कार्यक्रमों में उनका मार्गदर्शन और सानिध्य सदैव उपलब्ध रहता है।

स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय की नैतिकता समिति के अध्यक्ष बनने से पूर्व भी उन्होंने लगभग एक दशक तक Sree Chitra Tirunal Institute for Medical Sciences and Technology की नैतिकता समिति के अध्यक्ष के रूप में उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की थीं। चिकित्सा अनुसंधान तथा औषधि परीक्षणों से संबंधित मामलों में उन्हें दशकों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त है।

जब मैंने केरल विश्वविद्यालय के कुलपति का अतिरिक्त दायित्व संभाला, तब मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे विश्वविद्यालय की नैतिकता समिति का अध्यक्ष पद भी स्वीकार करें। उन्होंने सहर्ष इस उत्तरदायित्व को ग्रहण किया और आज उस समिति को भी वे अत्यंत प्रभावशाली और उत्कृष्ट नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

असाधारण न्यायबोध उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। साथ ही, विद्यार्थियों और शोधार्थियों के प्रति उनका दृष्टिकोण सदैव सहयोगपूर्ण, संवेदनशील और प्रोत्साहनजनक रहा है। यह उनके व्यक्तित्व का एक अत्यंत प्रशंसनीय पक्ष है।

अपने पचासीवें वर्ष में प्रवेश कर रहे आदरणीय न्यायमूर्ति हरिहरन नायर सर को मैं अपनी ओर से तथा केरल स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय और केरल विश्वविद्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ और सादर अभिनंदन अर्पित करता हूँ। उनकी दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य और सतत सक्रिय जीवन की मंगलकामना करता हूँ।

**कुलपति, केरल विश्वविद्यालय,**
**कुलपति स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय**

मलयाळम से अनूदित

# एक विवाद–मुक्त समाज के निर्माण हेतु न्यायमूर्ति श्री एम.आर.हरिहरन नायर का अथक प्रयास

डॉ. एन. राधाकृष्णन

माननीय न्यायमूर्ति श्री एम.आर.हरिहरन नायर जी के 85वें जन्मदिवस के इस शुभ अवसर पर मैं उन्हें अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं प्रार्थनाएँ अर्पित करता हूँ। ईश्वर करे कि आप तथा आपकी आदरणीया धर्मपत्नी दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करें। हिंदू परंपरा में 84वाँ जन्मवर्ष जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ाव माना जाता है, क्योंकि यह लगभग एक हजार पूर्ण चंद्र-दर्शनों (चंद्र-चक्रों) की पूर्णता का प्रतीक है। यह अवस्था व्यक्ति की आंतरिक ऊर्जा के परिपक्व होने, सांसारिक कर्म-बंधनों के शिथिल पड़ने तथा आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) की ओर अग्रसर होने का संकेत मानी जाती है।

मैं केरल हिंदी साहित्य अकादमी तथा उसके ऊर्जावान महासचिव डॉ. सुनंदा शारदा को भी हार्दिक बधाई देता हूँ, जिन्होंने केरल के इस महान सपूत को सम्मानित करने के लिए विविध सामाजिक कार्यक्रमों के आयोजन का यह अत्यंत प्रशंसनीय उपक्रम रचा है। न्यायमूर्ति श्री हरिहरन नायर उन विरले व्यक्तित्वों में हैं जिन्होंने परिस्थितियों के प्रवाह के साथ बहने या सुविधाजनक मार्ग अपनाने के स्थान पर अदम्य साहस और दूरदृष्टि का परिचय देते हुए मानव-कल्याण को अपने जीवन का सर्वोच्च ध्येय बनाया।

चूँकि इस अभिनन्दन ग्रंथ में सम्मिलित अनेक लेखक न्यायमूर्ति हरिहरन नायर के न्यायपालिका तथा समाज के प्रति अमूल्य योगदान पर विस्तार से प्रकाश डालेंगे, इसलिए मैं उनके उस विशिष्ट और असाधारण योगदान पर अपना विचार केंद्रित करना चाहूँगा, जिसके माध्यम से उन्होंने समाज में गांधीवादी मूल्यों को सुदृढ़ करने का प्रयास किया। विशेष रूप से, गांधीजी के सपने के भारत की स्थापना के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका तैयार करने तथा न्यायिक क्षेत्र में अपने व्यापक अनुभव को जटिल सामाजिक यथार्थों से जोड़ने में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। न्यायमूर्ति हरिहरन नायर सदैव इस बिंदु पर केंद्रित रहे कि गांधीजी के उस स्वप्न को साकार करने की दिशा में सामाजिक समरसता और शांति को बढ़ावा दिया जाए तथा सभी पक्षों के हितों की रक्षा करते हुए विभिन्न प्रकार के विवादों का समाधान किया जाए।

मुझे वर्ष 2002 से उनके साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमारी पहली ही भेंट में मुझे यह अनुभव हुआ कि उनके भीतर एक सच्चा गांधीवादी बसता है। वे समाज के व्यापक जनसमुदाय तक गांधीजी के विचारों और रचनात्मक कार्यक्रमों को पहुँचाने के लिए निरंतर सक्रिय और प्रतिबद्ध दिखाई देते थे।

उनसे मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि तिरुवनंतपुरम् स्थित महात्मा गाँधी कॉलेज में अध्ययन के दौरान उन पर जिन व्यक्तित्वों का सबसे गहरा प्रभाव पड़ा, उनमें उस समय के प्रतिष्ठित एवं अत्यंत सम्मानित प्राचार्य प्रो.एम.पी.मन्मथन का विशेष स्थान था। वे एक सच्चे गांधीवादी चिंतक, सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षक रहे जिन्होंने केरल भर में विद्यार्थियों और गांधीवादी कार्यकर्ताओं की अनेक पीढ़ियों को ढाला। वे असल में साक्षात् गांधीजी के आदर्शों का मूर्त रूप थे। मद्यपान जैसी सामाजिक बुराई के विरुद्ध उनके संघर्षपूर्ण नेतृत्व ने गांधी-युग के पश्चात् एक नई मिसाल स्थापित की। उनकी सत्यनिष्ठा और व्यक्तिगत सद्गुणों ने उन्हें समाज में व्यापक सम्मान और श्रद्धा प्रदान की। उनके लिए जीवन निरंतर संघर्ष और सेवा का पर्याय था। वे अनेक दृष्टियों से अद्वितीय व्यक्तित्व थे जिनके दामाद हैं केरल हिंदी साहित्य अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष।

न्यायमूर्ति श्री हरिहरन नायर ने मुझे तथा केरल गाँधी स्मारक निधि में मेरे सहयोगियों को "गांधीयन इनिशिएटिव फॉर सोशल हार्मनी (GISH)" की स्थापना के लिए प्रेरित किया और स्वयं उसके अध्यक्ष बने। इसके अंतर्गत हमने स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को विधिक सेवा प्राधिकरण के अधिकारियों से जोड़ते हुए एक पायलट परियोजना प्रारंभ करने का निर्णय लिया। यह

परियोजना 12 अक्टूबर 2024 को वेंगानूर पंचायत के सहयोग से औपचारिक रूप से प्रारंभ की गई।

इस परियोजना की सफलता ने कोच्ची नगर निगम के महापौर का ध्यान आकर्षित किया जिन्होंने इसे कोच्चि निगम के सभी छह जोनल कार्यालयों में लागू करने की पहल की। "जनसा (जनकीय न्याय सभा)" नामक इस परियोजना का उद्घाटन 16 मार्च 2025 को कोच्चि निगम के छहों जोनल कार्यालयों में तथा 30 मई 2025 को पिरवम नगरपालिका में किया गया।

परियोजना की सफलता से संबंधित आवश्यक आँकड़े एकत्र करने के पश्चात केरल सरकार से अनुरोध किया गया कि इस व्यवस्था को राज्य की सभी स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में लागू करने के लिए सामान्य निर्देश जारी किए जाएँ तथा उन्हें संबंधित इकाइयों के माध्यम से केरल राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण से जोड़ा जाए।

अंततः यह व्यय-मुक्त व्यवस्था "जनसा" भारत के सभी नागरिकों के लिए (गैर-समझौतायोग्य मामलों को छोड़कर) दीवानी एवं आपराधिक विवादों के समाधान का एक पूर्णतः निःशुल्क माध्यम बन गया है। यह उपलब्धि निस्संदेह अत्यंत महत्वपूर्ण है और न्यायमूर्ति श्री हरिहरन नायर की उपलब्धियों के मुकुट में एक अमूल्य रत्न के समान है।

मुझे स्पष्ट रूप से स्मरण है कि केरल गाँधी स्मारक निधि के मार्गदर्शन में गठित "विळिञ्ञम् पीस ग्रुप" के गठन और संचालन में न्यायमूर्ति श्री हरिहरन नायर ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे इस समूह के अध्यक्ष थे। इस समूह ने हिंसा को कम करने तथा संघर्ष विराम स्थापित करने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया।

यहाँ गांधीजी द्वारा स्वतंत्र भारत के शासकों को दिए गए प्रसिद्ध "ताबीज" (Talisman) का स्मरण करना भी प्रासंगिक होगा। गांधीजी के लिए सामाजिक न्याय की स्थापना सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक थी। उनकी दृष्टि में प्रत्येक व्यक्ति के आँसू पोंछना और समाज के सबसे वंचित एवं उपेक्षित व्यक्ति का कल्याण सुनिश्चित करना ही सच्चे राष्ट्र-निर्माण का आधार है। गांधीजी ने अपने तावीज में लिखा था – तब यह "मैं तुम्हें एक ताबीज देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो, अथवा जब तुम्हारा अहंकार तुम पर हावी होने लगे, कसौटी अपनाओ। उस सबसे गरीब और सबसे दुर्बल व्यक्ति का चेहरा स्मरण करो जिसे तुमने देखा हो और अपने आप से पूछो कि जो कदम तुम उठाने जा रहे हो, उससे उसे कोई लाभ होगा या नहीं? क्या इससे उसे कुछ प्राप्त होगा? क्या इससे वह अपने जीवन और भाग्य पर नियंत्रण प्राप्त कर सकेगा? दूसरे शब्दों में, क्या वह कदम भूखे और आध्यात्मिक रूप से वंचित करोड़ों लोगों के लिए स्वराज्य का मार्ग प्रशस्त करेगा?"

निस्संदेह, न्यायमूर्ति श्री एम. आर. हरिहरन नायर आशा और प्रकाश के ऐसे दीपस्तंभ हैं, जो हम सबको अपने भीतर स्थित गांधी को पहचानने की प्रेरक शक्ति हैं।

**अध्यक्ष. गाँधी स्मारक निधि**
**तिरुवनंतपुरम**

अंग्रेज़ी से अनूदित

गांधी स्मारक निधि में डॉ.राधाकृष्णन, श्री. के.जयकुमार (आई ए एस -सेवावृत) और जादूगर गोपीनाथ मुतुकाट के साथ

तिरुवनंतपुरम के विधायक श्री विन्सेंट से APJ अब्दुल कलाम मीडिया वॉइस अवार्ड 2024 ग्रहण करते हुए।

# शताभिषेक के अवसर पर प्रिय भ्राता न्यायमूर्ति एम.आर.हरिहरन नायर को शुभकामनाएँ

**न्यायमूर्ति आर. बसंत**

एक हजार पूर्ण चंद्रमाओं को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि उन्होंने इस पृथ्वी पर मेरे भ्राता के रंगों से भरे, सार्थक और प्रेरणादायी जीवन को देखा है। मुझे भी उनके समान यह विशेष सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मैंने उनको देखा, निकट से जाना, उनके स्नेह को अनुभव किया, उनसे प्रेम किया, उनके अनेक गुणों की प्रशंसा की और पिछले लगभग चार दशकों में उनमें से कुछ गुणों के अनुकरण करने का प्रयास भी किया।

मुझे हमारी पहली भेंट आज भी स्पष्ट रूप से स्मरण है। वर्ष 1988 में मैंने केरल उच्च न्यायिक सेवा में प्रवेश किया था और तिरुवनंतपुरम् में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में नियुक्त हुआ था। वे तिरुवनंतपुरम् के ही निवासी हैं। उस समय न्यायिक अफसर संघ, केरल की एक समिति की बैठक आयोजित की गई थी, जिसके वे अत्यंत सक्रिय सदस्य थे। तिरुवनंतपुरम् के सभी न्यायिक अधिकारियों को भी उसमें भाग लेने का अवसर दिया गया था। मैं यह जानने के लिए उत्सुक था कि यह संगठन किस प्रकार कार्य करता है, इसलिए मैंने उसमें भाग लेने का निर्णय लिया। वहीं मैंने पहली बार वरिष्ठ जिला न्यायाधीश श्री एम. आर. हरिहरन नायर को देखा— गौरवर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, तेजस्वी, बुद्धिमान और प्रभावशाली।

न जाने किस अदृश्य आत्मीयता के कारण उसी दिन से हम दोनों एक-दूसरे के निकट आ गए। वह संबंध आज भी उतनी ही जीवंतता के साथ बना हुआ है। अब लगभग अड़तीस वर्ष हो चुके हैं।

न्यायाधीश प्रायः एक-दूसरे को "भाई" कहकर संबोधित करते हैं, किंतु वह केवल औपचारिकता होती है। परंतु वे मेरे लिए वास्तव में बड़े भाई के समान रहे हैं। मुझे स्मरण है कि उन्होंने मुझे वेंगानूर स्थित अपने घर ले गए थे। वहाँ मेरी भेंट उनके पूज्य एवं आदरणीय पिता से हुई, जो न्यायिक सेवा में मजिस्ट्रेट रह चुके थे और उस समय सेवानिवृत्त जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनसे मिलने से पहले भी मैं उनके संबंध में सुन चुका था। न्यायमूर्ति के.टी.थोमस ने जिन्हें अधिवक्ता के रूप में उनके समक्ष उपस्थित होने का अवसर मिला था, उनके प्रति अत्यंत सम्मान और श्रद्धा व्यक्त की थी।

बाद में उन्होंने मुझे Kerala Judicial Officers' Association का अध्यक्ष पद स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। यह वही पद था जिसमें वे स्वयं पहले अत्यंत प्रतिष्ठा के साथ सुशोभित थे। उन्होंने सदैव मेरे न्यायिक और प्रशासनिक प्रश्नों तथा दुविधाओं को समझने और उनका समाधान खोजने में मेरी सहायता की।

तलश्शेरी में जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में मैंने उनका स्थान ग्रहण किया। बाद में उन्हें उच्च न्यायालय में न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किया गया। सेवानिवृत्ति के पश्चात भी राज्य और समाज ने उनको विभिन्न महत्वपूर्ण दायित्वों के लिए आमंत्रित किया और उन्होंने प्रत्येक पद को अपनी कार्यकुशलता और समर्पण से गौरवान्वित किया। उन कार्यों में मिशनरी भावना, गहन अध्ययन, समयबद्धता, तत्परता तथा किसी भी समस्या की जड़ तक पहुँचकर उसका समाधान खोजने की अद्भुत क्षमता सदैव स्पष्ट दिखाई देती रही। विवाद-निवारण में सामंजस्य और सौहार्द को सर्वोपरि रखने का आपका दृष्टिकोण विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है।

मुझे कोट्टयम में उनके नेतृत्व में आयोजित वह अत्यंत सफल लोक अदालत आज भी स्मरण है, जब वे वहाँ जिला एवं सत्र न्यायाधीश थे। वह राज्य की सर्वश्रेष्ठ लोक अदालतों में से एक मानी गई थी। उन्होंने मुझे वहाँ मध्यस्थ (Mediator) के रूप में कार्य करने का अवसर दिया था। बाद के वर्षों में वह अनुभव मेरे लिए अत्यंत उपयोगी और शिक्षाप्रद सिद्ध हुआ।

मित्रताओं और संबंधों को सँजोने की उनकी क्षमता भी एक अनुकरणीय पाठ रही है। उन्होंने अपने वरिष्ठों, सहकर्मियों, कनिष्ठों और यहाँ तक कि सेवानिवृत्त अधिकारियों एवं पूर्व न्यायाधीशों के साथ सदैव आत्मीय संबंध बनाए रखे। इन संबंधों का उपयोग सदैव व्यवस्था और संस्थाओं के हित में किया।

नई तकनीकों और कौशलों को सीखने की उनकी तत्परता भी उल्लेखनीय रही है। बहुत पहले, जब इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और डिजिटल साधन न्यायिक अधिकारियों के बीच सामान्य नहीं हुए थे तब भी उन्हें अपने दैनिक कार्यों में प्रयोग करने लगे थे। यही नहीं मेरे जैसे तकनीकी दृष्टि से अनभिज्ञ लोगों

को भी उन्होंने इन साधनों को सीखने और अपनाने के लिए प्रेरित किया।

किसी भी न्यायिक व्यक्तित्व की पूर्णता उसके पारिवारिक जीवन के बिना संभव नहीं होती। परिवार के मुखिया के रूप में भी वे एक आदर्श रहे हैं।

अपने स्वास्थ्य के प्रति उनका दृष्टिकोण भी अनुकरणीय रहा है। संतुलित और सादा भोजन, नियमित व्यायाम तथा अनुशासित जीवनशैली को उन्होंने सदैव अपनाया। मैं यह सब आश्चर्य और प्रशंसा के साथ देखता रहा हूँ और इससे मुझे भी प्रेरणा मिली है।

मैं और सुशीला अनेक अवसरों पर उनके परिवार के साथ रहे, घर में ठहरे और उनके साथ बिताए सुखद क्षणों का आनंद लिया। वे स्मृतियाँ आज भी हमारे मन में जीवंत और मधुर बनी हुई हैं।

वे सदैव मेरे हितैषी रहे हैं। सेवानिवृत्ति के पश्चात दिल्ली जाकर वकालत प्रारंभ करने के लिए भी उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपने जीवन द्वारा यह दिखाया कि सेवानिवृत्ति के बाद भी सक्रिय, सार्थक और आनंदपूर्ण जीवन कैसे जिया जा सकता है।

वर्ष 1988 के बाद के मेरे जीवन में वे वास्तव में मेरे बड़े भाई रहे हैं। वास्तविक जीवन में मुझे बड़े भाई का स्नेह प्राप्त नहीं हुआ था, किंतु इन्होंने उस अभाव की इतनी सुंदर पूर्ति की कि मुझे कभी उसकी कमी महसूस नहीं हुई।

आकाश से आपको निहारने वाले वे एक हजार पूर्णचंद्र भी संभवतः इस बात से ईर्ष्या करती होंगी कि पृथ्वी पर एक ऐसा उज्ज्वल नक्षत्र विद्यमान है जिसकी आभा उन्हें भी पीछे छोड़ देती है।

प्रिय भाई हरिहरन नायर, मैं आपके लिए सक्रियता, संतोष, आनंद और उत्तम स्वास्थ्य से परिपूर्ण जीवन के अनेक और वर्षों की हार्दिक कामना करता हूँ।

**वरिष्ठ अधिवक्ता, उच्चतम न्यायालय, भारत**
**तथा पूर्व न्यायाधीश, उच्च न्यायालय, केरल**

अंग्रेज़ी से अनूदित

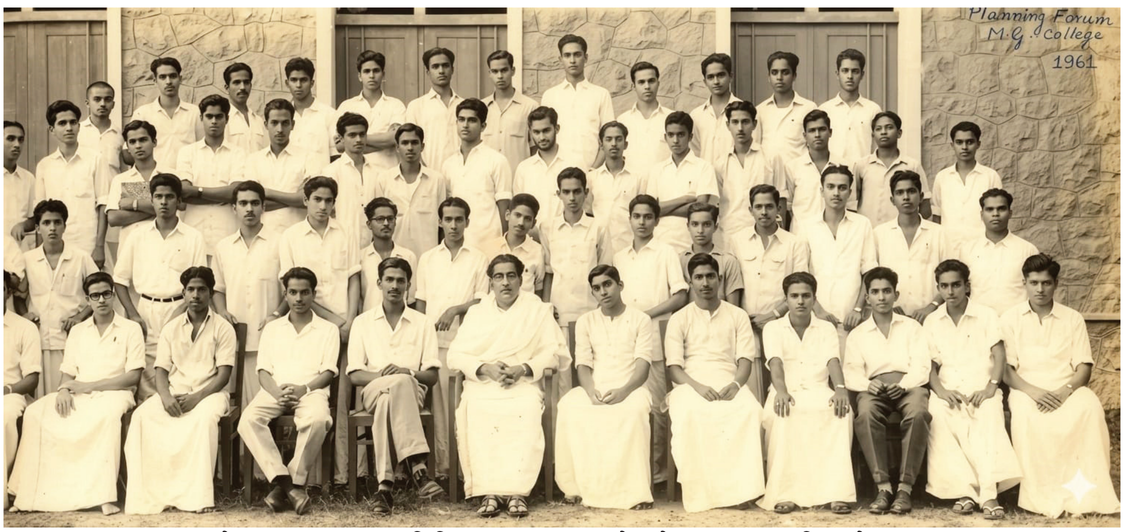

प्रो. एम.पी. मन्मथन, प्रिंसिपल, एम.जी. कॉलेज के साथ - (प्लानिंग फोरम)

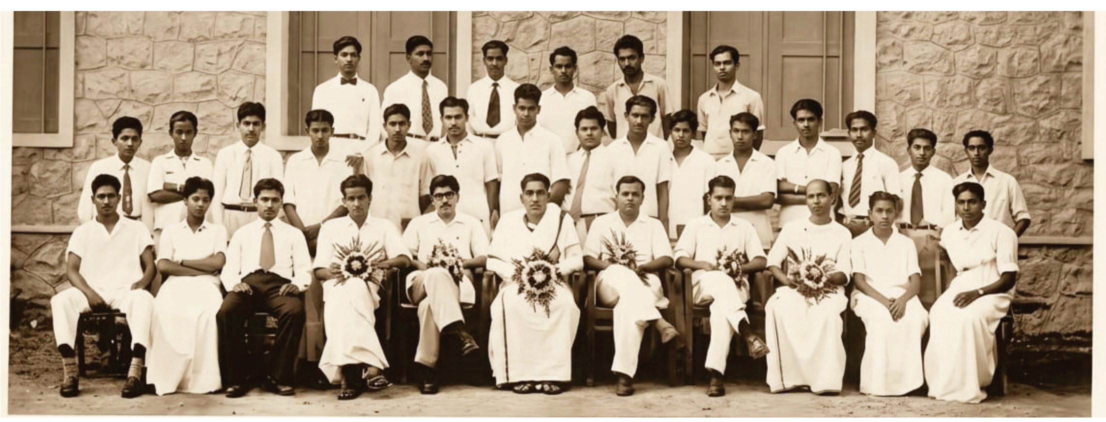
रेडियो और इलेक्ट्रॉनिक्स क्लब, एम.जी. कॉलेज-1959

# ईमानदारी एवं निष्पक्षता की प्रतिमूर्ति न्यायाधीश एम.आर.हरिहरन नायर

**न्यायमूर्ति के. अब्रहाम मैथ्यू**

मैं स्वयं को सम्मानित महसूस करता हूँ कि मुझसे केरल उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री न्यायमूर्ति एम.आर. हरिहरन नायर (जिन्हें मैं हरिहरन नायर सर कहता हूँ) के बारे में एक लेख लिखने के लिए कहा गया। वे 1967 से विधि के क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं जबकि उन्होंने अधिवक्ता के रूप में पंजीकरण कराया था।

1995 में मेरा स्थानांतरण उप-न्यायाधीश, कोट्टयम के रूप में हुआ, जहाँ वे जिला एवं सत्र न्यायाधीश थे। पुनः 1999 में वे एर्णाकुळम में जिला एवं सत्र न्यायाधीश बने, जहाँ मैं उप-न्यायाधीश था। कुछ ही महीनों में उन्हें केरल उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किया गया।

निष्पक्षता, ईमानदारी, विधिक विशेषज्ञता, न्यायिक स्वभाव और बौद्धिक क्षमता-ये सभी गुण एक न्यायाधीश में होना चाहिए। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि हरिहरन नायर सर में ये सभी गुण विद्यमान थे।

एक न्यायाधीश विभिन्न भूमिकाओं में कार्य करता है। एक जिले में न्यायपालिका के प्रमुख के रूप में, जिला न्यायाधीश का कर्तव्य होता है कि जनता का न्यायपालिका पर विश्वास बनाए रखे। जिला न्यायपालिका वह दर्पण है जिसमें जनता राज्य अथवा राष्ट्रीय न्यायपालिका का चेहरा देखती है। इसलिए जिला न्यायपालिका का सुचारु रूप से कार्य करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अपने न्यायिक कर्तव्यों को प्रभावी ढंग से निभाने के अलावा, जिला न्यायाधीश को अपने सहकर्मियों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। चूँकि वे जिले की न्यायपालिका का प्रशासनिक प्रमुख हैं, सभी न्यायालयों के कर्मचारियों का नियंत्रक भी हैं। बिना किसी संदेह के मैं कह सकता हूँ कि हरिहरन नायर सर इन दोनों क्षेत्रों में सफल रहे।

उन्होंने यह सुनिश्चित किया था कि सभी संबंधित पक्ष-न्यायिक अधिकारी, अधिवक्ता, न्यायिक कर्मचारी, अधिवक्ता लिपिक आदि अदालत के अंदर और बाहर अनुशासन बनाए रखें और सामंजस्य के साथ कार्य करें, जिसके लिए उन्हें सभी ओर से सराहना मिली थी। वे न्यायिक अधिकारियों के लिए एक आदर्श थे। जो प्रशंसा के योग्य था, उसे प्रशंसा दी गई, जिसे सलाह की आवश्यकता थी, उसे सलाह दी गई और जिसे चेतावनी की आवश्यकता थी, उसे चेतावनी दी गई।

मुझे जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आयोजित अदालतों और विधिक साक्षरता शिविरों की याद है, जिसके अध्यक्ष हरिहरन नायर सर थे। एर्णाकुळम में एक विशाल लोक अदालत का आयोजन किया गया, जिसने मीडिया का ध्यान आकर्षित किया और उच्च न्यायालय से प्रशंसा प्राप्त की।

उनकी सफलता का रहस्य क्या था? कोई भी कार्य उन्होंने कभी लापरवाही से नहीं किया। चाहे मामला सरल हो या जटिल, उसे पूरी योजना और सावधानी के साथ किया गया। कोई भी बात उनकी दृष्टि से नहीं छूटती थी। वे जो भी कार्य करते थे, वह कंप्यूटर जैसी सटीकता के साथ करते थे। उन्होंने स्वयं अनुशासन बनाए रखा और दूसरों से भी इसकी अपेक्षा की।

इस प्रकार, केवल उनकी विधिक विद्वता ही नहीं, बल्कि हर कार्य को सुव्यवस्थित तरीके से करने की उनकी रुचि ने उन्हें ऐसा न्यायाधीश बनाया, जिनके कार्य की सराहना न केवल संबंधित क्षेत्र के लोगों ने, बल्कि आम जनता और मीडिया ने भी की।

न्यायाधीश के पद से सेवानिवृत्ति के बाद समाज के लिए मध्यस्थता (मेडिएशन) के माध्यम से उनका योगदान न केवल विधि क्षेत्र के लोगों द्वारा, बल्कि अन्य लोगों द्वारा भी सराहा गया है। वे स्वयं को समाज सेवा में सक्रिय रखते हैं-ऐसा कार्य जो बहुत कम पूर्व उच्च न्यायालय न्यायाधीश करते हैं। मेरा मानना है कि यही उनके स्वस्थ मन, सुदृढ़ शरीर और सतर्क, तेज मस्तिष्क का रहस्य है।

ईश्वर उन्हें सभी प्रयासों में सफलता प्रदान करें।

**पूर्व न्यायाधीश, उच्च न्यायालय,**
**केरल**

अंग्रेज़ी से अनूदित

# एक मित्र का सप्रेम वंदन

**टी.पी. श्रीनिवासन, भारत के पूर्व राजदूत**

माननीय न्यायमूर्ति एम.आर.हरिहरन नायर, जिन्हें मैं स्नेहपूर्वक 'हरि' कहकर संबोधित करता हूँ, अपने पचासीवें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं । उनमें उच्च बुद्धिमत्ता और गहन विद्वत्ता, दूरदर्शिता, कानून के क्षेत्र में व्यापक अनुभव, अटूट विनम्रता, अत्यधिक सहयोगी स्वभाव, अद्भुत विनोदप्रियता, ऊर्जा और जीवन के प्रति अपार उत्साह का अद्वितीय संगम है ।

वर्ष 2004 में जब मैं तिरुवनंतपुरम् लौटा, तब हरि मेरे प्रथम मित्र बने । यद्यपि वेङ्ङानूर से जुड़ा हमारा बाल्यकालीन परिचय हमारे संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बनाता गया, यूनिवेर्सिटी कॉलेज में मेरे अत्यंत प्रिय मित्रों में से एक, सुरपालन नायर, हरि के कारण मेरे और अधिक निकट आए । हाल ही में हमने सुरपालन को खोया , किंतु उससे पूर्व एक पारिवारिक विवाह के सुखद अवसर पर हमने उसके साथ कुछ अत्यंत मूल्यवान क्षण बिताए थे।

जैसे मैं विधिशास्त्र के क्षेत्र में नया था, वैसे ही वे अंतरराष्ट्रीय विषयों से परिचित ही रहे थे; किंतु हमारी आत्मीय समझ और पारस्परिक सामंजस्य ने हमें अनेक समान उद्देश्यों के लिए साथ मिलकर कार्य करने में सक्षम बनाया। वे "केरल अंतर्राष्ट्रीय केंद्र" (Kerala International Centre) के संस्थापक न्यासियों में से एक हैं तथा हमारी सभी चर्चाओं और गतिविधियों में सक्रिय रूप से सहभागी रहे हैं।

एक अधिवक्ता मित्र ने मेरा परिचय उनसे उस समय कराया, जब हम "केरल अंतर्राष्ट्रीय केंद्र" (Kerala International Centre) के लिए ट्रस्ट डीड तैयार कर रहे थे। उन्होंने न केवल अपनी तीक्ष्ण विधिक बुद्धिमत्ता से हमारी सहायता की, बल्कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र को भी अत्यंत सहजता से आत्मसात कर लिया। शिक्षा, पत्रकारिता, परोपकार और विकास संबंधी गतिविधियों सहित मैंने जो भी कार्य किए, उनमें उनका विवेकपूर्ण मार्गदर्शन सदैव मुझे प्राप्त होता रहा। जब मैं केरल राज्य उच्च शिक्षा परिषद का उपाध्यक्ष था, तब उन्होंने केरल में एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना के अध्ययन हेतु गठित समिति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हरि ने मुझे हिंदी साहित्य की दुनिया से भी परिचित कराया। इसका मुख्य कारण था उनके हिंदी शिक्षक, पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर जी, के साथ उनका निरंतर संपर्क । डॉ.चन्द्रशेखरन नायर केरल में हिंदी भाषा और साहित्य के अत्यंत सम्मानित पुरोधा थे तथा राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक रूप से प्रतिष्ठित थे। मेरी हिंदी भले ही सीमित थी, फिर भी मैंने केरल हिंदी साहित्य अकादमी के अनेक कार्यक्रमों में भाग लिया और हिंदी के प्रति अपनी समझ और आत्मीयता को समृद्ध किया।

सेवानिवृत्ति के पश्चात भी हरि का कोई दिन ऐसा नहीं बीता कि वे किसी न किसी सरकारी उत्तरदायित्व से जुड़े न रहे हों। उन्होंने अनेक आयोगों का नेतृत्व किया तथा राज्य में कई संस्थाओं की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हरि एक समर्पित गांधीवादी हैं और उन्हें विझिंजम में सांप्रदायिक सौहार्द स्थापित करने के उद्देश्य से विशेष रूप से चयनित किया गया था।

हरि की लेखन प्रक्रिया केवल विधिक विषयों तक सीमित नहीं है। उनकी आत्मकथा अपने व्यापक जीवन-दृष्टिकोण तथा विविध क्षेत्रों के अनुभवों के कारण विशेष महत्त्व रखती है।

केरल की विधिक व्यवस्था में उनका स्थायी योगदान एक ऐसी संस्थागत व्यवस्था है जिसके माध्यम से स्थानीय स्तर पर ही विवादों का समाधान न्यायालय गए बिना और अधिवक्ताओं की सहायता लिए बिना किया जा सकता है। इस व्यवस्था को ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक स्वीकृति प्राप्त हुई, जहाँ न्यायालयी मुकदमे निर्धनों के लिए दीर्घकालिक संघर्ष और अत्यधिक व्यय का कारण बनते थे। उन्होंने कृपापूर्वक एशियानेट न्यूज़ पर प्रसारित मेरे साप्ताहिक कार्यक्रम के एक विशेष प्रकरण में भाग लेकर इस व्यवस्था की कार्यप्रणाली को विस्तार से समझाया था।

हरि एक सुखी पारिवारिक जीवन जीने वाले व्यक्ति हैं। उनकी धर्मपत्नी अत्यंत स्नेहमयी, सहयोगी और आकर्षक व्यक्तित्व के धनी हैं तथा उनके बच्चे भी जीवन में सफल हैं। परंतु इन सब से बढ़कर, हरि मेरे लिए एक सतत मार्गदर्शक और सच्चे मित्र रहे हैं। मैं उनके दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य की हार्दिक कामना करता हूँ, ताकि वे इसी प्रकार अनेक लोगों के जीवन में प्रसन्नता, आशा और उजास का संचार करते रहें।

**पूर्व राजदूत, भारत**

**महानिदेशक, केरल इंटरनाशनल सेंटर, तिरुवनंतपुरम**

अंग्रेज़ी से अनूदित

# न्यायमूर्ति हरिहरन नायर

**एस.एम. विजयानंद, आई.ए.एस (सेवानिवृत्त)**

मेरा न्यायमूर्ति हरिहरन नायर से पहला परिचय तब हुआ जब उन्होंने केरल में स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के लोकपाल (ओम्बुड्समैन) का पद संभाला।

ओम्बुड्समैन संस्था की स्थापना हुई, तो सरकार की प्राथमिकता सूची में एक महत्वपूर्ण कार्य था। स्थानीय स्वशासन विभाग के प्रभारी सचिव के रूप में मुझे एक उपयुक्त भवन खोजने का दायित्व दिया गया। जब हमें कोई भवन नहीं मिला तो इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट इन गवर्नमेंट (IMG) से अस्थायी रूप से एक भवन देने का अनुरोध किया गया जिसे उन्होंने स्वीकार किया। लेकिन बाद में ओम्बड्समैन उस भवन को छोड़ने में अनिच्छुक रहे और काफी समय तक वहीं कार्य करते रहे। इस बीच हमने पाळयम स्थित TRIDA भवन में एक अच्छा स्थान चिन्हित किया।

मुझे उस समय के ओम्बुड्समैन न्यायमूर्ति हरिहरन नायर को नए भवन में स्थानांतरित होने के लिए मनाना था। मुझे स्वीकार करना होगा कि मैं बहुत चिंतित था। व्यक्तिगत रूप से, मुझे अपने करियर में कम से कम छह उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों से बिना किसी ठोस कारण के कठोर व्यवहार का सामना करना पड़ा था। कई बार मुझे धमकाया गया और अक्सर अनावश्यक रूप से रूखे व्यवहार का सामना करना पड़ा। एक बार तो मुझे अपने पूर्ववर्ती द्वारा उच्च न्यायालय के आदेश के क्रियान्वयन में हुई देरी के लिए जवाब देने के लिए बुलाया गया। यह जानते हुए भी सरकारी वकील ने मुझे बताया कि न्यायाधीश 'आरोपी' को अदालत में देखना भी पसंद नहीं करते। मुझे बाहर जाकर पेड़ के नीचे खड़ा रहने को कहा गया और संकेत मिलने पर ही अंदर आने को कहा गया। मुझे हमेशा लगता था कि ऐसी प्रथाएँ अतीत की बात हैं, लेकिन यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे आधुनिक समय में भी किसी रूप में मौजूद हैं।

लेकिन मेरी सुखद आश्चर्य की सीमा नहीं रही जब मैंने न्यायमूर्ति हरिहरन नायर को एक अत्यंत विनम्र, सौम्य और ईमानदार व्यक्ति के रूप में पाया जिनमें कोई अहंकार नहीं था और जो समस्याओं पर विस्तार से चर्चा कर व्यावहारिक समाधान खोजने में रुचि रखते थे। यह संक्षिप्त मुलाकात एक स्थायी संबंध में बदल गई, जो आज भी मज़बूत है। इस एक अनुभव ने उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के प्रति मेरी धारणा को बदल दिया।

स्थानीय स्वशासन के लिए ओम्बुड्समैन एक अनूठी संस्था है जो केवल केरल में मौजूद है। इसका निकटतम समकक्ष लोकायुक्त है, लेकिन ओम्बुड्समैन उससे अधिक शक्तिशाली है और स्थानीय निकायों तथा निर्वाचित प्रतिनिधियों के प्रशासनिक दोषों को सुधारते हुए अंतिम निर्णय दे सकता है। सामान्यतः उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के लिए इस भूमिका में ढलना कठिन होता है, क्योंकि इसमें सक्रिय भूमिका निभानी पड़ती है। लेकिन न्यायमूर्ति हरिहरन नायर इस भूमिका के लिए बिल्कुल उपयुक्त थे और उनके कार्यकाल में इस संस्था ने अपनी पूरी क्षमता प्राप्त की। उन्होंने इसकी शक्तियों और कमज़ोरियों का विश्लेषण किया और उन्हें सुधारने के लिए कदम उठाए जिनमें एक जांच इकाई की स्थापना भी शामिल थी।

बाद में हमारा संपर्क बना रहा। 2017 से पैलियम इंडिया के साथ मेरे जुड़ाव ने इसे और मज़बूत किया। पैलियम इंडिया का नेतृत्व न्यायमूर्ति हरिहरन नायर के भाई डॉ.राजगोपाल करते हैं, जिन्होंने भारत में सामुदायिक पालीएटिव केयर की शुरुआत की और केरल में इसे सफलतापूर्वक लागू किया। आज इसे विशेषज्ञों द्वारा न केवल भारत बल्कि विकासशील देशों में भी सर्वश्रेष्ठ मॉडल माना जाता है। मैं ने न्यायमूर्ति हरिहरन नायर को इस संस्था के कार्यों में सक्रिय रुचि लेते हुए देखा जो उनके मानवीय पक्ष को दर्शाता है।

न्यायमूर्ति हरिहरन नायर अपनी ईमानदारी और परिणाम देने की क्षमता के लिए प्रसिद्ध हैं। सरकारों ने उनकी प्रतिभा का उपयोग कई न्यायिक और अर्ध-न्यायिक आयोगों में किया, जहाँ उन्होंने अपेक्षा से अधिक कार्य किया।

पिछले कुछ वर्षों में वे कानूनी सेवा प्राधिकरण के माध्यम से स्थानीय निकायों के साथ मिलकर वैकल्पिक विवाद निपटान प्रणाली को बढ़ावा देने में पूरे उत्साह के साथ कार्य कर रहे हैं। उन्होंने मुझे इस योजना के निर्माण और क्रियान्वयन में शामिल किया तो मैं स्वयं को सम्मानित महसूस कर रहा था। योजना पर चर्चा के दौरान मैंने उनके सूक्ष्म दृष्टिकोण और व्यावहारिक समाधान क्षमता को देखा जो उनके लक्ष्य के प्रति जुनून से मेल खाती है। यह कार्यक्रम वेङ्ङानूर ग्राम पंचायत और अन्य स्थानीय निकायों में उल्लेखनीय रूप से सफल रहा।

यहीं नहीं उन्होंने रुकते हुए पूरे केरल के सभी स्थानीय निकायों को चरणबद्ध तरीके से इस योजना में शामिल करने की

कार्ययोजना तैयार की है। इसे वर्तमान सरकार ने मंजूरी दी है और मुझे विश्वास है कि नई सरकार भी इसे अपनाएगी। यह एक नई दिशा स्थापित करेगी और स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को जनता का विश्वास जीतने में मदद करेगा।

मैं न्यायमूर्ति हरिहरन नायर के साथ अपने संबंधों को संजोकर रखता हूँ। उनके उत्साह, सकारात्मकता और कड़ी मेहनत से मैं प्रेरित हूँ। उच्च न्यायालय से सेवानिवृत्ति के बाद का उनका जीवन एक अध्ययन का विषय होना चाहिए। उनका जीवन दर्शाता है कि एक न्यायाधीश औपचारिक सेवा समाप्त होने के बाद भी समाज के लिए बहुत कुछ कर सकता है।

**सेवानिवृत्त मुख्य सचिव,**
**केरल**

अंग्रेज़ी से अनूदित

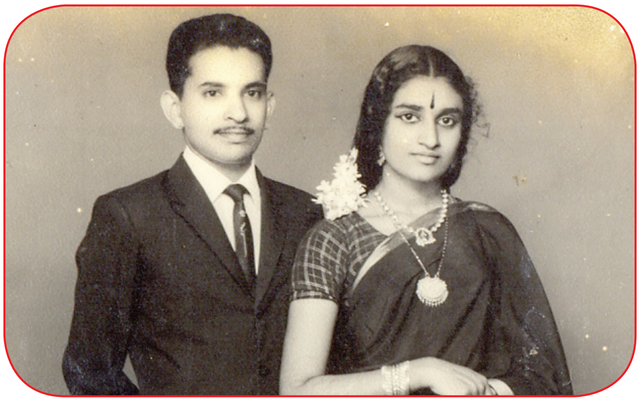

न्यायमूर्ति श्री एम.आर. हरिहरन नायर पत्नी श्रीमती पार्वती के. देवि के साथ

माता-पिता, भाई और बहनों के साथ

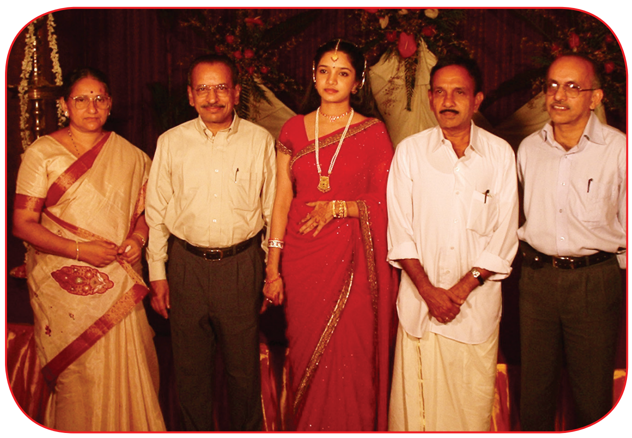

भाई-बहनों और भाई की बेटी के साथ

न्यायमूर्ति एम.आर. हरिहरन नायर जी और पत्नी अपने दोनों बेटों (बिनोद हरिहरन और बिजु हरिहरन) के साथ

करीबी दोस्तों और उनके जीवनसाथियों के साथ न्यायमूर्ति एम.आर. हरिहरन नायर और पत्नी

# न्याय-पथ पर एक सौम्य उपस्थिति

**डॉ. जॉर्ज ओणक्कूर**

हमारे न्याय क्षेत्र में आधी शताब्दी से अधिक समय तक अपनी प्रतिभा का प्रकाश बिखेरने वाले एक प्रख्यात न्यायाधीश, उस व्यक्तित्व को और अधिक गरिमा प्रदान करती है उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता। संकटों का सामना करने वाले लोगों के साथ यह न्यायाधीश सदैव दृढ़ता से खड़े रहे। उन्होंने कौन-कौन से पद संभाले अथवा किन-किन मार्गों पर चले, उसका यहाँ विस्तार से उल्लेख नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि वे सभी बातें सर्वविदित हैं। जिला न्यायाधीश तथा बाद में उच्च न्यायालय के प्रतिष्ठित न्यायाधीश के रूप में श्री एम. आर. हरिहरन नायर अत्यंत सम्मानित और आदरणीय रहे हैं। किंतु मैं जिस व्यक्तित्व को अधिक निकट से जानता और सम्मान देता हूँ, वह है उनकी सेवानिवृत्ति के बाद का जीवन।

सामान्यतः हम देखते हैं कि सेवानिवृत्ति के बाद अधिकांश विधिवेत्ता सामाजिक जीवन से एकदम अलग होकर घर तक सीमित हो जाते हैं। उनके सामाजिक संबंधों की निकटता कम हो जाती है। परंतु न्यायमूर्ति हरिहरन नायर ने सेवानिवृत्ति के बाद भी मानवतावादी कार्यों में स्वयं को पूर्णतः समर्पित कर दिया। राज्य के लोकायुक्त (ओम्बड्समैन) के रूप में उन्होंने तीन अत्यंत व्यस्त वर्ष बिताए। उसके बाद वे सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़े अनेक मंचों पर और अधिक सक्रिय हो गए।

जब सरकार ने विभिन्न समितियों में सेवानिवृत्त न्यायाधीशों की सेवाएँ लेने का निर्णय किया, तब न्यायमूर्ति हरिहरन नायर को ही चुना गया। राज्य की जेल समीक्षा समिति (प्रिजन रिव्यू कमेटी) का दायित्व उन्हें सौंपा गया। इसके बाद विभिन्न सरकारों के कार्यकाल में, राजनीतिक भेदभाव के परे, उनपर अनेक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपे गए। सर्वमान्य कोट्टुकाल कृष्णकुमार का ज्येष्ठ पुत्र अभिजीत एक अज्ञात बीमारी के कारण अचानक इस संसार से विदा हो गया।

अभिजीत की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए श्री कृष्णकुमार ने एक फाउंडेशन की स्थापना की। योग्य एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों की सहायता करना, विद्यालयों में पठन-पाठन की संस्कृति को बढ़ावा देना, सामाजिक जागरूकता के लिए पत्र-पत्रिकाओं का वितरण करना आदि अनेक योजनाएँ इस फाउंडेशन ने रुपायित किया।

जब मैंने इस फाउंडेशन के अध्यक्ष का दायित्व संभाला, तब संरक्षक के रूप में सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति हरिहरन नायर का सहयोग प्राप्त हुआ। एक समर्पित स्वयंसेवक की भाँति आवश्यकता पड़ने पर हर अवसर पर उपस्थित होने वाले उनके व्यक्तित्व को मैं अत्यंत आदर के साथ स्मरण करता हूँ।

अभिजीत फाउंडेशन बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य कर रहा है। बच्चों के मानसिक विकास, विद्यालयों में नशामुक्ति अभियान, समय-समय पर मानसिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक वनीकरण कार्यक्रम तथा निम्स मेडिसिटी के सहयोग से अंग प्रत्यारोपण के बाद स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने वाले लोगों के संरक्षण कार्यक्रम जैसे अनेक क्षेत्रों में यह फाउंडेशन उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। इन सभी गतिविधियों में न्यायमूर्ति हरिहरन नायर द्वारा दी जा रही सेवाएँ अत्यंत प्रशंसनीय हैं।

वे जिस भी कार्यक्षेत्र से जुड़ते हैं, वहाँ अपनी सक्रिय उपस्थिति और विशिष्ट पहचान स्थापित करते हैं। इसलिए उन्हें एक सच्चे कर्मयोगी के रूप में सम्मानपूर्वक संबोधित किया जा सकता है।

श्री हरिहरन नायर अब शताभिषेक की गौरवपूर्ण अवस्था में पहुँच चुके हैं। आयु तो जीवन में बदलते रहने वाले कुछ अंकों का मात्र संकेत है; यह जिन्दगी, सेवा और कर्म मंडली में कोई परिवर्तन नहीं लाती। कर्मयोग का प्रवाह निरंतर चलता रहता है। आज भी वे पहले की ही भाँति आत्मसमर्पण और आनंद के साथ कर्मरत हैं। उनका जीवन सतत जाग्रत कर्मशीलता का उदाहरण है।

श्री हरिहरन नायर ने तिरुवनंतपुरम् के महात्मा गांधी कॉलेज में स्नातक शिक्षा प्राप्त की थी, जहाँ सर्वोदयी आचार्य प्रो. एम. पी. मन्मथन प्राचार्य थे। ऐसे महान आचार्य के जीवन-मूल्यों को अपनी जीवन-पुस्तक का पाठ बनाने वाला विद्यार्थी यदि सर्वमान्य और आदरणीय व्यक्तित्व बन जाए तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

शताभिषिक्त इस श्रेष्ठ सहकर्मी के प्रति मेरा स्नेह, सम्मान और हार्दिक आयुरारोग्य की मंगलकामनाएँ।

**प्रख्यात उपन्यासकार, कथाकार, समीक्षक,**
**पटकथा-लेखक एवं यात्रा- साहित्यकार**

मलयाळम से अनूदित

# न्यायमूर्ति हरिहरन नायर के परिवार के संबंध में

**के. रामन पिल्लै**

लगभग पचहत्तर वर्ष पूर्व मुझे शुद्ध जल से परिपूर्ण वेल्लायणी झील के समानान्तर स्थित पूंकुलम् से वेंगानूर तक फैले ग्राम-प्रदेश में जाकर रहने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ पहुँचते ही मुझे ऐसा अनुभव हुआ मानो मैं किसी नए संसार में आ गया हूँ। मेरे मूल निवास वेञ्जारमूड में उस समय जाति-व्यवस्था, अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव व्यापक रूप से विद्यमान थे। तथाकथित निम्न जातियों, विशेषकर पुलयर समुदाय के लोगों के लिए सार्वजनिक विद्यालयों में प्रवेश लेकर शिक्षा प्राप्त करना भी वहाँ संभव नहीं था। परंतु इस नए स्थान पर मेरे अनुभव बिल्कुल भिन्न थे। वहाँ पुलयर जैसे समुदायों के बच्चों का विद्यालय जाना सामान्य बात थी। शिक्षित लोगों में से अनेक सरकारी सेवाओं में भी नियुक्त हो चुके थे। सार्वजनिक स्थानों पर किसी के साथ कोई अस्पृश्यता या भेदभाव नहीं किया जाता था।

स्वाभाविक रूप से मैंने जानना चाहा कि यह परिवर्तन कैसे संभव हुआ। अनेक लोगों से मुझे केवल एक ही उत्तर मिला - महात्मा अय्यंकाली का नाम। मेरे मन में यह जिज्ञासा

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका का प्रकाशन - 28 दिसंबर 2024

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका का प्रकाशन - 28 दिसंबर 2023

उत्पन्न हुई कि स्वयं पुलयर समुदाय से संबंधित होते हुए भी अय्यंकाली उस समय की सामाजिक वर्जनाओं और रूढ़ियों को तोड़कर इतनी ऊँचाई तक कैसे पहुँच सके। मैंने यह प्रश्न अपने ज्येष्ठ भ्राता साधुशीलन परमेश्वरन पिळ्ळै (जो आगे चलकर स्वामी परमेश्वरानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए) से पूछा, जिनके कारण ही मैं वहाँ पहुँचा था। उन्होंने कहा "अय्यंकाली स्वाभाविक रूप से अत्यंत बुद्धिमान, परिपक्व और अध्ययनशील व्यक्ति थे। वे निरंतर यह विचार करते रहते थे कि अपने समुदाय तथा स्वयं के उत्थान के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ कैसे निर्मित की जाएँ। इसी खोज में उन्हें एक महान व्यक्तित्व मिले - पालक्काड के स्वामी सदानन्द। उन्होंने आध्यात्मिकता और भौतिक जीवन का समन्वय करने वाली कार्यपद्धति अपनाई थी। तिरुवनंतपुरम् में उनके अनेक अनुयायी भी बन गए थे। उन्हीं के संपर्क में आकर अय्यंकाली भी स्वामी सदानन्द के अनुयायियों में सम्मिलित हुए। इस संबंध ने 'चित् सभा' जैसी आध्यात्मिक संस्था तथा 'साधुजन परिपालन संघम्' जैसी सामाजिक संस्था के माध्यम से असमानताओं को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही, भौतिक जीवन में सहारा और संरक्षण देने वाले ऊट्टरत्तला परिवार को भी कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करना चाहिए। अय्यंकाली के नवजागरण कार्यों के लिए आर्थिक सहायता और उच्च वर्ग के लोगों का समर्थन अत्यावश्यक था। ऊट्टरत्तला गोविन्द पिळ्ळै ने अत्यंत उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की। उन्होंने अय्यंकाली के नाम पर आठ एकड़ कृषि भूमि दानस्वरूप लिख दी थी।"

जब मुझे ये सारी बातें ज्ञात हुई, तब अय्यंकाली की सहायता करने वाले उस महान व्यक्ति से मिलने की इच्छा हुई। तब तक स्वामी सदानन्द समाधिस्थ हो चुके थे, किंतु ऊट्टरत्तला परिवार के मुखिया गोविन्द पिळ्ळै जीवित थे। मेरे ज्येष्ठ भ्राता ने उनसे मेरा परिचय कराया। उसी परिवार के वर्तमान प्रमुख

प्रथम आयोजित अखिल भारतीय न्यायिक अफसर सम्मेलन 1990

व्यक्तित्व हैं न्यायमूर्ति एम. आर. हरिहरन नायर, जिनका आज हम सम्मान कर रहे हैं। ऊट्टरत्तला गोविन्द पिळ्ळै की पत्नी की बहन के पौत्र हैं न्यायमूर्ति एम.आर.हरिहरन नायर।।

पूंकुलम् से वेंगानूर तक फैले इस ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक सेवा के कार्यों में पूर्णकालिक रूप से संलग्न मेरे ज्येष्ठ भ्राता परमेश्वरन पिळ्ळै, आर्य (हिंदू) धर्मसेवा संघ के प्रचारक भी थे। उस संगठन के स्थानीय घटक के अध्यक्ष रहे श्री. ऊट्टरत्तला गोविन्द पिल्लै।

उस समय जनप्रतिनिधियों की व्यवस्था नहीं थी, किंतु ऊट्टरत्तला गोविन्द पिळ्ळै जनप्रतिनिधियों से भी अधिक तत्परता और निष्ठा के साथ जनता की समस्याओं का समाधान करते थे। आज भी मैं उस महान व्यक्तित्व को आदरपूर्वक स्मरण करता हूँ। उनके उत्तराधिकारी श्री एम. आर. हरिहरन नायर भी अपने पारिवारिक गौरव के अनुरूप न्यायपूर्ण ढंग से सदैव जनकल्याण के लिए समर्पित रहे हैं।

मेरे ज्येष्ठ भ्राता परमेश्वरन पिळ्ळै ने बाद में मुझसे कहा था कि उनके द्वारा संचालित हिंदी विद्यालय में "हरिहरन" नामक एक बालक अध्ययन करता था, जो असाधारण बुद्धिमत्ता और अनुशासन-बोध से युक्त था। वही बालक आगे चलकर उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति हरिहरन नायर बने। एक न्यायाधीश के रूप में वे अपने समक्ष आने वाले मामलों का शीघ्र निपटारा करने के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थे। बाद में अनेक आयोगों में कार्य करते समय भी वे कम समय में जाँच पूरी कर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने में सफल रहे। इसी कारण विभिन्न राजनीतिक दलों की सरकारें भी उन्हें जाँच संबंधी दायित्व सौंपने में विशेष रुचि लेती थीं। श्री एम. आर. हरिहरन नायर आज भी निष्पक्ष, न्यायप्रिय और मानवतावादी व्यक्तित्व के रूप में कार्यरत हैं।

उनका वर्णन करने के लिए भर्तृहरि का एक प्रसिद्ध श्लोक यहाँ उद्धृत करना उपयुक्त होगा

"निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु<br>
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।<br>
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा न्यायात्पथः<br>
प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥"

अर्थात् "नीतिशास्त्र के पंडित चाहे निंदा करें अथवा प्रशंसाः लक्ष्मी आए या चली जाए; मृत्यु आज आए या युगों के बाद, धीर पुरुष न्याय के मार्ग से कभी विचलित नहीं होते।"

**पूर्व प्रदेश अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा),**
**केरल सदस्य, राष्ट्रीय परिषद**
**भारतीय जनता पार्टी**

मलयाळम से अनूदित

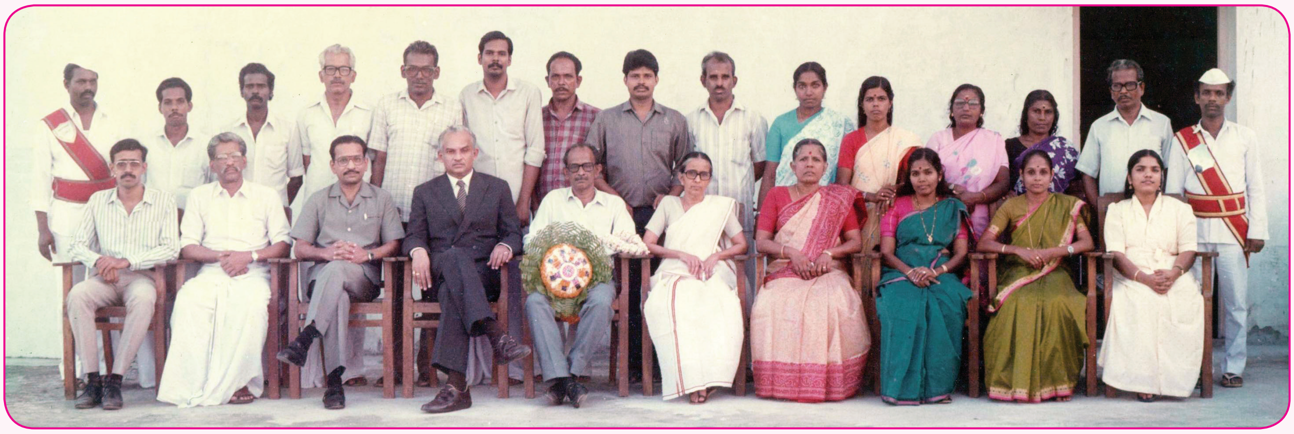

CBI एरणाकुलम के स्पेशल जज के तौर पर

केरल हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस श्रीकृष्णा को बिदाई देते हुए

2003 में उच्च न्यायालय के जजों द्वारा दी गई बिदाई

रिटायरमेंट के दिन उच्च न्यायालय में धन्यवाद भाषण देते हुए

रिटायरमेंट के दिन की बिदाई में रात्रि भोज के अवसर पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए

इंडियन लॉ इंस्टीट्यूट का बिदाई समारोह

एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में नर्तक पद्म भूषण धनंजयन के साथ

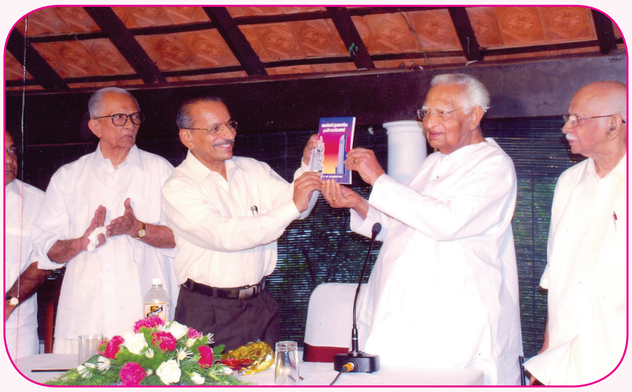

मलयाल मनोरमा के मुख्य संपादक द्वारा अधिवक्ता सी.एन. बालकृष्णन नायर की पुस्तक का विमोचन

पाला में विधिक साक्षरता शिबिर के उद्घाटन के अवसर पर

लक्षद्वीप यात्रा - जस्टिस रामकुमार, जहाज़ के कैप्टन आदि के साथ

कानूनी साक्षरता शिबिर - उद्घाटन समारोह

एरणाकुलम ज़िला अदालत के सौंदर्यीकरण कार्यक्रम का उद्घाटन (केरल हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री ओमप्रकाश, जस्टिस पी.ए. मोहम्मद आदि के साथ)

कोट्टयम में कानूनी साक्षरता शिबिर का उद्घाटन

NIAS बैंगलोर में सुप्रीम कोर्ट के जाने-माने वरिष्ठ वकीलों के साथ

महाराजा उत्राटम तिरुनाल, जनरल दीपक कपूर और अभिनेता मोहन लाल के साथ

2011 में लोकपाल पद से बिदाई

केरल हाई कोर्ट में अपनी किताब 'नीति पर्वम' का विमोचन। केंद्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद, कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश को पहली प्रति देते हुए

गवर्नर पी. सदाशिवम और राजदूत टी.पी. श्रीनिवासन से सौहृद संवाद

NAFO ग्लोबल की ओर से पुरस्कृत एम.आर. हरिहरन नायर जी

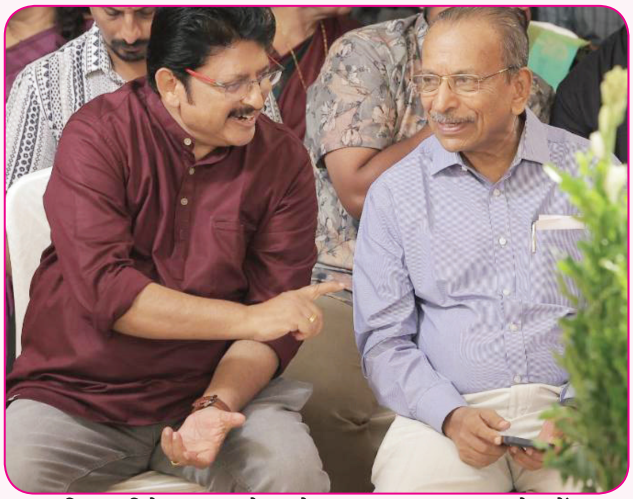

फिल्म निदेशक राजसेनन के साथ एक शादी समारोह में

विजी तम्पी, डॉ. ए.एम. उन्निकृष्णन और थॉमस मैथ्यू के साथ मलयाण्मा की सालाना बैठक में।

केंद्रीय मंत्री श्री प्रह्लाद जोशी और भाजपा नेता श्री सुरेंद्रन की मौजूदगी में अंबेडकर सेमिनार में भाषण देते हुए।

वेंगनूर ग्राम पंचायत में जन्सा शिकायत पेटी का उद्घाटन।

न्यायमूर्ति श्री. एम.आर. हरिहरन नायर केरल हिन्दी साहित्य अकादमी पुरस्कार स्वीकार करते हुए

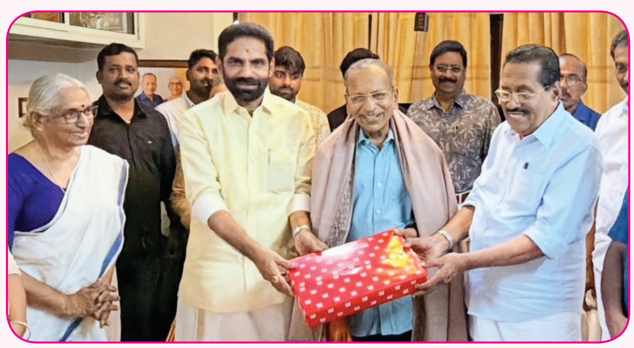

अभिजीत फ़ाउंडेशन द्वारा 85वें जन्मदिन के अवसर पर सम्मान समारोह में

# न्याय-निष्पादन का मूर्तिमान रूप - जस्टिस एम.आर.हरिहरन नायर

**डॉ पी.एन.विजयकुमार (ज़िला न्यायाधीश सेवानिवृत्त)**

सन् 1989 में, ऑल इंडिया जुडिशियल ऑफिसर्स एसोसिएशन के पुनरुद्धार के निमित्त दिल्ली में आयोजित एक सम्मेलन में केरल सिविल जुडिशियल ऑफिसर्स एसोसिएशन के प्रतिनिधि के रूप में उसके तत्कालीन अध्यक्ष श्री एम.आर. हरिहरन नायर साहब उपस्थित थे और केरल जुडिशियल मजिस्ट्रेट एसोसिएशन के प्रतिनिधि के रूप में मैं। उसी अवसर पर दिल्ली के विज्ञान भवन में पहली बार साहब से मेरी भेंट हुई और परिचय का सूत्र बँधा। दो दिनों तक चले उस दिल्ली जुडिशियल ऑफिसर्स सम्मेलन में हमने अपने-अपने अनुभव और सुझाव सभा के समक्ष रखे। दूसरे दिन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने विभिन्न राज्यों से पधारे प्रतिनिधियों से कर-मिलन किया और न्याय-क्षेत्र में सार्थक सुधार करने के अपने संकल्प को व्यक्त करते हुए न्यायाधीशों का सक्रिय सहयोग माँगा। उन दो दिनों के अनवरत सान्निध्य से यह भली-भाँति समझ में आया कि हरिहरन नायर साहब सामान्य व्यवहार में और कार्य के प्रति अपने दृष्टिकोण में भी एक सेवा-भावना से ओतप्रोत विलक्षण व्यक्तित्व हैं।

जिला न्यायाधीश के रूप में केरल के विभिन्न स्थानों में कार्यरत रहते हुए उन्होंने अनेक जटिल प्रकरणों में उत्कृष्ट और स्मरणीय निर्णय सुनाए। एरणाकुळम में सीबीआई न्यायाधीश के पद पर रहते हुए उन्होंने 'नम्मुक्कु पार्क्कान मुंतिरित्तोप्पुकळ' सहित अनेक फिल्मों के निर्माता तिरुवंतपुरम-निवासी मणि मल्ल्यत्त अभियुक्त बने हत्याकांड का विचारण किया। कोट्टयम में जिला एवं सत्र न्यायाधीश के पद पर रहते हुए उन्होंने जो उल्लेखनीय वाद सुने, उनमें प्रमुख थे बारह से ज्यादा स्थानों पर तीस से ज्यादा लोगों की हत्याएँ करने वाले अपराधी 'रिप्पर चाक्को' का प्रकरण तथा वेल्लूर और कोट्टयम के बीच चलती रेल गाड़ी के शौचालय में तिरुवल्ला-निवासी नर्स सेलीनाम्मा की हत्या का हृदय-विदारक मामला। इन सनसनीखेज हत्याकांडों की सुनवाई जैसे-जैसे अखबारों में छपने लगी, जनसामान्य के मध्य कोट्टयम के जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री एम.आर.हरिहरन नायर का नाम सुपरिचित और आदरणीय बन गया।

जिला न्यायाधीश के रूप में जब मेरी पदोन्नति हुई, उस अवसर पर केरल उच्च न्यायालय ने मुझे एक ऐसे पद पर नियुक्त किया जो अधिकांश लोगों को तब तक बहुत कम ज्ञात था - वह था 'विधिक सहायता एवं सलाह बोर्ड' का कार्यकारी निदेशक। सच कहूँ तो वह नियुक्ति मेरे जीवन की सर्वाधिक आनंददायक और मनोनुकूल नियुक्ति सिद्ध हुई। मुख्य न्यायाधीश और राज्य के विधि-विभाग मंत्री की सह-अध्यक्षता में गठित वह विधिक सहायता बोर्ड वर्तमान लीगल सर्विसेज़ अथॉरिटी का पूर्ववर्ती निकाय था। निर्धनों को निःशुल्क विधिक सहायता प्रदान करना, शासन को विधिक परामर्श देना और सामान्य जन में विधिक चेतना का संचार करना - ये इस बोर्ड के लक्ष्य और क्रियाकलाप थे। मैं अंतःकरण से यह विश्वास रखता था कि निःशुल्क विधिक सहायता प्राप्त करने का अधिकार साधारण नागरिकों को है और उन्हें इस अधिकार से अवगत कराना मेरा विधिक दायित्व है - परंतु उन दिनों निःशुल्क विधिक सहायता के लिए आवेदन अत्यंत विरल होते थे। विधि की महत्ता और उसकी संभावनाओं को सामान्य जन तक पहुँचाना, यह बोध जगाना कि विधिक संरक्षण उनका अधिकार है और विधि की दृष्टि में सभी समान हैं, संविधान की सर्वोच्चता और उसके उद्देश्यों से जनसाधारण को परिचित कराना - इन लक्ष्यों को व्यावहारिक रूप देने के लिए हमने 'विधि-बोधन संगोष्ठियाँ' और 'लोक अदालतें' आयोजित करने का मार्ग चुना। उन दिनों 'लोक अदालत' शब्द ही अधिकांश लोगों के लिए अपरिचित था। मुख्य न्यायाधीश सहित उच्च न्यायालय के न्यायाधीशगण, जिला न्यायाधीशगण और अन्य न्यायाधिपतियों के सर्वांगीण सहयोग से मैं अधिकांश जिलों में निरंतर और भव्य विधि-बोधन सम्मेलन आयोजित करने में समर्थ हुआ।

उस काल में जब श्री हरिहरन नायर कोट्टयम के जिला न्यायाधीश थे, उन्होंने इस दिशा में अत्यंत प्रशंसनीय सेवा की। प्रत्येक माह कोट्टयम जिले के विभिन्न भागों में विधि-बोधन शिबिर और लोक अदालतें स्वतःस्फूर्त ऊर्जा के साथ आयोजित करने में वे सफल रहे। इसके परिणामस्वरूप न्याय-व्यवस्था के

प्रति और विधिक सहायता के अधिकार के प्रति जनमानस में विश्वास और जागरूकता का संचार हुआ। इस अवसर पर उन्होंने जो सहयोग और समर्थन मेरे कार्यों को दिया, उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। वन क्षेत्रों में जाकर और अन्य दूरस्थ स्थलों पर पहुँचकर, वहाँ के अधिकारियों को उन दिनों क्रियान्वयन में कठिनाइयाँ उत्पन्न करने वाले मादक द्रव्य संबंधी नए कानून के जटिल पहलुओं पर व्याख्यान देने के लिए वे भी सहर्ष आए। इसी प्रकार के शिविर लक्षद्वीप में भी आयोजित करने के लिए वे वहाँ गए - यह बात भी मुझे ज्ञात है।

न्यायालय केवल समाज के उच्च वर्ग के लिए बना एक बहुमूल्य और खर्चीला तंत्र है - इस भ्रांत धारणा को बदलना; यह ज्ञान देना कि न्यायालय के द्वार सामान्य जन के लिए भी मुक्त हैं; यह स्पष्ट करना कि अपने-अपने मामलों में न्याय-संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए किन न्यायालयों, किन न्यायाधिकरणों या किन अधिकारियों से संपर्क करना चाहिए - इन सब विषयों की जानकारी सामान्यजन को देने के अतिरिक्त, शीघ्र और अल्पव्ययी न्याय-प्रदान में न्यायाधीशों का भी उत्तरदायित्व है और वे उसके प्रति वचनबद्ध हैं - यह भाव समाज में प्रसारित करने में उनके कार्यकलाप सफल रहे। वे मानते थे - और जन-जन को समझाते भी थे कि न्याय की सुचारु स्थापना के लिए न्यायाधीशों को अपनी ऊँची अट्टालिकाओं से उतरकर, जन-साधारण के बीच आकर, समाज से संपर्क स्थापित कर, सामाजिक समस्याओं को समझकर ही कार्य करना होगा; और इसके लिए उनमें उत्तरदायित्व-बोध तथा सहानुभूति की भावना अनिवार्य है।

उन दिनों विधिक सहायता बोर्ड के सह-अध्यक्ष पद पर केरल उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस के.पी. सिन्ह और केरल के विधि-विभाग मंत्री श्री ई.चंद्रशेखरन नायर आसीन थे। दोनों ने बोर्ड के क्रियाकलापों को चलाने में मुझे निर्बाध और अमूल्य सहयोग प्रदान किया। उन दिनों विभिन्न जिलों में जाकर संपन्न की गई लोक अदालतों और विधि-बोधन संगोष्ठियों में जस्टिस एम. आर.हरिहरन नायर की प्रमुख और सक्रिय उपस्थिति रही - यह तथ्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सिविल और आपराधिक विधि में उनका गहन पांडित्य था और अत्यंत सरल और सुग्राह्य भाषा में सामान्यजन को तथ्य समझाने में वे सिद्धहस्त थे और श्रोताओं द्वारा उठाए गए किसी भी प्रश्न का सही और विधिसम्मत उत्तर देने में वे पूर्णतः समर्थ थे।

सन् 1999 में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद पर आसीन होने के पश्चात् भी उन्होंने एक निष्पक्ष और प्रतिष्ठित न्यायाधीश की गरिमा अक्षुण्ण बनाए रखी। विधि में उनकी गहन विद्वत्ता और समर्पण-भावना उन्हें अधिवक्ताओं की प्रशंसा का पात्र बनाता रहा। उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद से सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी अनेक महत्त्वपूर्ण पद और दायित्व उनके पक्ष में आए, और उन सबका निर्वहन उन्होंने अत्यंत जिम्मेदारी और दक्षता के साथ किया तथा प्रत्येक स्थान पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी। सादा जीवन और आडंबर-रहित जीवन-शैली को अपनाने वाले वे निर्भीक हैं। कहीं यात्रा पर जाने में या सम्मेलन-स्थलों तक पहुँचने में उन्हें कभी किंचित् भी आनाकानी नहीं थी। उनमें असाधारण ऊर्जा का स्रोत विद्यमान है - यह बात विशेष रूप से लिखने योग्य है।

न्याय-पालन के लिए विधि-ग्रंथों की जड़, निर्जीव व्याख्या की आवश्यकता नहीं है; विधिक उपबंधों की व्याख्या इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर की जानी चाहिए कि उससे संबंधित पक्षों को न्याय मिले और समाज का कल्याण हो - इस विचार के प्रति उनकी विशेष आस्था ही उन्हें अन्य न्यायाधीशों से विशिष्ट और अलग बनाती है। नियम कालानुकूल परिवर्तनशील है। कल जो सत्य माना जाता था, वह आज संदिग्ध भी हो सकता है। नवीन विधिक उपबंधों को तत्काल आत्मसात करने और उनकी स्वतंत्र व्याख्या निरूपित करने की उनकी क्षमता अतुलनीय है। श्री एम.आर. हरिहरन साहब का जीवन केरल की न्यायपालिका का एक देदीप्यमान अध्याय है।

चौरासी तो केवल एक संख्या है। उच्च न्यायालय से सेवानिवृत्ति के पश्चात् लगभग सात आयोगों और समितियों का उत्तरदायित्व उन्होंने सुयोग्य ढंग से निभाया। इस समय वे केरल स्वास्थ्य विश्वविद्यालय और केरल विश्वविद्यालय की अनुसंधान समितियों के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं। अभी और भी अनेक कार्य उन्हें समाज-कल्याण के लिए करने शेष हैं। उसके लिए आवश्यक स्वास्थ्य और उत्साह उन्हें सर्वशक्तिमान ईश्वर निरंतर प्रदान करते रहें - यही मेरी हार्दिक प्रार्थना है।

**सेवानिवृत्त जिला न्यायाधीश**
**पूर्व अध्यक्ष, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित**
**जनजाति आयोग, केरल**

मलयाळम से अनूदित

# न्यायमूर्ति एम.आर.हरिहरन नायर : गांधीवाद को नई दिशा और व्यावहारिकता प्रदान करने वाले कर्मयोगी

डॉ. जैकब पुळिक्कन

अब शताभिषेक की ओर अग्रसर न्यायमूर्ति एम. आर. हरिहरन नायर के संबंध में अपने विचारों को संक्षेप में प्रस्तुत करने का यह मेरा विनम्र प्रयास है।

यद्यपि मुझे उनसे परिचित हुए बहुत अधिक समय नहीं हुआ है, फिर भी इस अल्प अवधि में ही उनके प्रति मेरे मन में गहरा सम्मान और आत्मीयता उत्पन्न हुई। वस्तुतः उनके व्यक्तित्व का प्रभाव इतना सशक्त था कि मैं स्वाभाविक रूप से उनकी ओर आकर्षित हुआ। अपने आधिकारिक दायित्वों के निर्वहन में तथा सामान्य लोगों की कठिनाइयों का समाधान कर उन्हें न्याय दिलाने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और कर्मनिष्ठा ही मेरे जैसे अनेक लोगों को उनकी ओर आकृष्ट करती है।

जीवन के संघर्षों और कठिनाइयों का अनुभव करते हुए ही उन्होंने अपनी शिक्षा तथा अधिवक्ता जीवन का चरण पूरा किया था। अपने सम्पूर्ण आधिकारिक जीवन में वे सत्य और न्याय के मार्ग पर दृढ़तापूर्वक अग्रसर रहे।

सामान्यतः यह देखा जाता है कि उच्च पदों तक पहुँचने वाले अनेक लोग अपने पूर्व जीवन के संघर्षों और कठिनाइयों को भूलकर अहंकारपूर्ण व्यवहार करने लगते हैं। किंतु न्यायमूर्ति हरिहरन नायर इससे भिन्न हैं। सत्य और न्याय के मार्ग से विचलित हुए बिना सामान्य जनों के आँसू पोंछने और उनकी सहायता के लिए आज भी उसी समर्पण के साथ सक्रिय रहना ही उन्हें अन्य लोगों से अलग और विशिष्ट बनाता है।

कोविड काल के पश्चात ही मेरा उनसे परिचय हुआ। केन्द्र गांधी स्मारक निधि ने उन्हें अपने केरल घटक के सलाहकारों में से एक तथा मुझे कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में दायित्व सौंपा। इसी माध्यम से मुझे उनके कार्यों और व्यक्तित्व को निकट से समझने का अवसर मिला। उच्च न्यायालय से सेवानिवृत्ति के पश्चात भी अनेक उच्च पदों को सुशोभित करने वाले व्यक्ति होने के बावजूद वे सामान्य जनता के बीच जाकर कार्य करने में संकोच नहीं करते। समाज के उन लोगों की समस्याओं को समझकर उन्हें सहारा देना, जिन पर सामान्यतः किसी का ध्यान नहीं जाता, वास्तव में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है।

विश्वविद्यालय के गांधी अध्ययन केंद्र का प्रमुख रहते हुए मैं भी विधिक सहायता से संबंधित गतिविधियों में सक्रिय था। तिरुवनंतपुरम् में ऐसे कार्यों को आगे बढ़ाने में मुझे श्रीलंका के सर्वोदय आंदोलन के प्रवर्तक डॉ. ए. टी. आर्यरत्ने द्वारा संचालित सर्वोदय लीगल सेल के कार्यों से प्रेरणा मिली थी। इसके पश्चात मेरे नेतृत्व में तिरुवनंतपुरम् में सामान्य लोगों को न्याय दिलाने का कार्यक्रम शुरू करने और विवाद समाधान में आम आदमी को सहायता प्रदान करने वाले कार्यक्रम करने का अवसर मिला। इसी पृष्ठभूमि ने मुझे केरल गांधी स्मारक निधि की "गांधीयन इनिशिएटिव फॉर सोशल हार्मनी" योजना के अंतर्गत न्यायमूर्ति महोदय द्वारा प्रारंभ की गई "जनकीय न्याय सभा" से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। लीगल सर्विस अथॉरिटी के सहयोग से इस प्रकार की न्याय-व्यवस्था को लागू करने के उनके प्रयासों ने मेरे भीतर गहरी रुचि उत्पन्न की।

गांधी अध्ययन केंद्र की बहुआयामी गतिविधियों के अंतर्गत बच्चों के लिए "गांधी दर्शन" कार्यक्रम तथा आजीविका-विहीन लोगों के जीवन स्तर को सुधारने हेतु स्वदेशी उत्पाद निर्माण संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्यस्त हो जाने के कारण मैं अपने लीगल एड सेल की गतिविधियों को आगे नहीं बढ़ा पाया। ऐसे समय में न्यायमूर्ति महोदय द्वारा अधिक सुदृढ़ विधिक आधार और समान उद्देश्य के साथ प्रारंभ की गई "जनकीय न्याय सभा" के प्रति मेरे मन में विशेष रुचि उत्पन्न हुई। लीगल सर्विस अथॉरिटी, अधिवक्ताओं, पूर्व न्यायाधीशों के सहयोग से विभिन्न संस्थाओं को साथ जोड़कर इस व्यवस्था का प्रारंभ वास्तव में उल्लेखनीय कार्य था।

"जनकीय न्याय सभा" ऐसी योजना है, जिसके माध्यम से सामान्य लोगों के दैनिक जीवन में उत्पन्न छोटे-छोटे विवादों और संघर्षों का समाधान मध्यस्थों की सहायता और विधिक संरक्षण के साथ किया जाता है। स्थानीय स्वशासन संस्थाओं तथा लीगल सर्विस अथॉरिटी के संयुक्त प्रयासों से एक निःशुल्क न्याय प्रणाली को विकसित करने के पीछे न्यायमूर्ति महोदय का अथक परिश्रम, समर्पण और कर्मनिष्ठा निहित है। यह सच है कि

मेरे जैसे स्वदेशी आंदोलन से जुड़े कार्यकर्ताओं को भी इससे जुड़ने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

यद्यपि मैं "जनकीय न्याय सभा" के प्रारंभिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग नहीं ले सका, तथापि उनके प्रयासों के प्रति मेरा पूर्ण समर्थन और सम्मान सदैव बना रहा। यही हमारी मैत्री का मूल आधार भी है।

न्यायालय, न्यायालयी व्यय और अधिवक्ताओं की फीस समाज के निम्न वर्ग के लोगों के लिए वहन करना अत्यंत कठिन होता है। इस वास्तविकता को पूर्णतः समझते हुए विवाद समाधान के लिए एक सहज मंच उपलब्ध कराने के न्यायमूर्ति महोदय के प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय हैं।

दूसरों द्वारा किए जा रहे अच्छे कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए भी वे समय निकालते हैं, यह मेरे लिए अत्यंत प्रेरणादायी बात है। बच्चों के चरित्र-निर्माण को महत्व देते हुए मेरे द्वारा संचालित "गांधी दर्शन" कार्यक्रम तथा सामान्य लोगों के जीवन स्तर को उन्नत करने और स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उल्लेख उन्होंने कई मंचों पर, मेरी अनुपस्थिति में भी, सराहनापूर्वक किया है। यह गुण बहुत कम लोगों में देखने को मिलता है। सामान्यतः लोग मंच पर उपस्थित व्यक्तियों की प्रशंसा करते हैं, किंतु मंच छोड़ते ही सब कुछ भूल जाते हैं। परंतु न्यायमूर्ति महोदय अच्छे कार्यों की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा करने, उन्हें प्रोत्साहित करने तथा समाज के समक्ष लाने केलिए सदैव सजग रहते हैं। यह उनके व्यक्तित्व का अत्यंत दुर्लभ और प्रेरणादायी गुण है।

सत्य, अहिंसा, सेवा-भाव और स्वदेशी जैसे गांधीवादी आदर्शों के बारे में मंचों पर बोलना सरल है; किंतु उन्हें अपने जीवन में लागू करना अत्यंत दुर्लभ है। न्यायमूर्ति महोदय केवल इन आदर्शों की चर्चा ही नहीं करते, बल्कि उन्हें व्यवहार में भी लाते हैं यही उनके व्यक्तित्व की वास्तविक महानता का परिचायक है। यही कारण है कि मेरे मन में उनके प्रति गहरा सम्मान और स्नेह का भाव है-यह कहने में मुझे संकोच नहीं।

परस्पर पूरक उनके कार्यों को मैं सदैव गंभीरता और ध्यानपूर्वक देखता रहा हूँ। मेरे गांधीवादी प्रयासों को वे जो समर्थन देते हैं, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। इसी कारण मैं उनके कार्यों को समाज में एक ऐसे विशिष्ट स्वर के रूप में देखता हूँ, जो अन्य लोगों से अलग और प्रेरणादायक है।

प्रवाह के विपरीत तैरना सरल नहीं होता। किंतु न्यायमूर्ति महोदय ने अपनी विशिष्ट कार्यशैली और गांधीवादी दृष्टिकोण के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि ऐसा संभव है, और इसी के द्वारा उन्होंने अनेक लोगों को प्रेरणा भी प्रदान की है। यही उनके जीवन की वास्तविक सफलता है।

आयु केवल एक संख्या मात्र है। मेरी हार्दिक कामना और प्रार्थना है कि वे उत्तम स्वास्थ्य और अधिक कर्मठता के साथ समाजोपयोगी कार्यों में निरंतर सक्रिय रहकर अपना शेष जीवन व्यतीत करें। साथ ही, मैं केरल हिंदी साहित्य अकादमी की भी प्रशंसा करता हूँ, जो उन्हें सम्मानित करने के लिए ऐसे एक प्रकाशन का सुंदर प्रयास करता रहता है।

**निदेशक**
**गाँधी सेंटर फॉर रूरल डेवलपमेंट, केरल**

मलयाळम से अनूदित

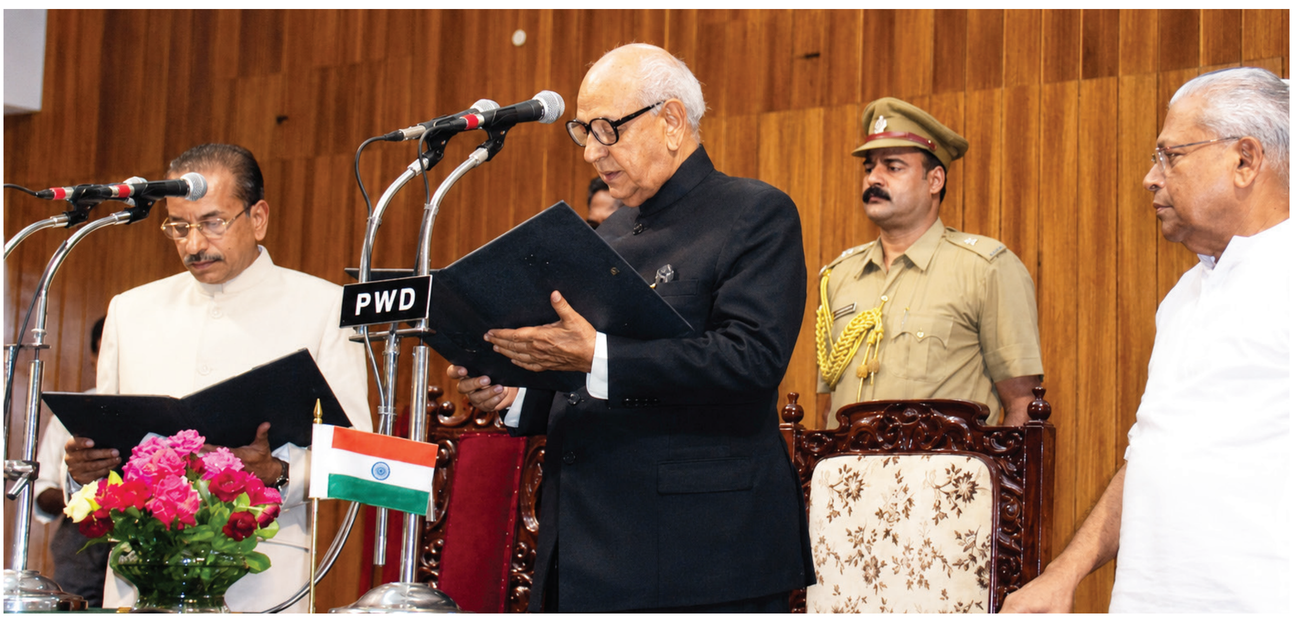


ओम्बुड्समैन के तौर पर शपथ लेते हुए, मुख्यमंत्री वी.एस. अच्युतानंदन जी की उपस्थिति में

# न्यायमूर्ति एम.आर. हरिहरन नायर जी : मानवीयता की प्रतिमूर्ति

**प्रो. (डॉ.) एस. तंकमणि अम्मा**

महान व्यक्तित्वों से मिलना, परिचित होना तथा उनके सहयोगी होने का अवसर मिलना वस्तुतः संयोग और सुयोग की बात है। अपने उच्च विचारों, सद्व्यवहारों तथा श्रेष्ठ जीवनमूल्यों के बलबूते ऐसे महान् व्यक्तित्व समूचे समाज पर अपना प्रबल प्रभाव डाल देते हैं और संपूर्ण समाज के आदर के पात्र बन जाते हैं। ऐसे ही बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी मनीषी हैं न्यायमूर्ति एम.आर.हरिहरन नायर जी। विधि या कानून का क्षेत्र ही उनका मुख्य कार्यक्षेत्र रहा किंतु भाषा, साहित्य, संस्कृति, कला, समाजसेवा जैसे क्षेत्रों में भी उन्होंने अपनी इंद्रधनुषी प्रतिभा का प्रसार किया है।

तिरुवनंतपुरम जिले के एक मामूली गाँव में जन्मे तथा ग्रामीण पाठशाला में प्रारंभिक शिक्षा पाए एक साधारण बालक का, उच्च शिक्षा प्राप्त करके केरल के उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद तक पहुँच जाना और विधि क्षेत्र के कई उच्च पदों को अलंकृत करना वस्तुतः विधि का ही विधान है। ग्रामीण विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत तिरुवनंतपुरम के प्रतिष्ठित महात्मा गांधी महाविद्यालय से भौतिक-विज्ञान में शिक्षा प्राप्त कर केरल विश्वविद्यालय से उन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद केरल विश्वविद्यालय से उन्होंने विधि में स्नातक उपाधि भी हासिल की। साक्ष्य अधिनियम तथा भारतीय दंड संहिता में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के उपलक्ष्य में वे 'मळ्ळूर गोविंद पिळ्ळै स्वर्ण पदक' के अधिकारी बने।

अधिवक्ता, मुन्सिफ, जिला न्यायाधीश जैसे विविध पदों पर निष्ठापूर्वक कार्य करने के अनंतर वे केरल के **उच्च न्यायालय के न्यायाधीश** के उच्च पद को भी सुशोभित करनेवाले हुए। न्यायाधीश के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद हरिहरन नायर जी ने लोक अदालत के मानद अध्यक्ष, जेल समीक्षा समिति के अध्यक्ष, स्थानीय स्वशासन संस्थानों के लोकपाल (ओंबुड्समैन), विभिन्न सरकारी उपक्रमों से संबद्ध मामलों में मध्यस्थ जैसे पदों पर रहकर जन-सेवा के अपने महत्वपूर्ण लक्ष्य को साकार किया। उनके सारे कार्यों के के मूल में जन-साधारण का हित ही काम करता था। सन् 2014 से वे केरल स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय की नैतिकता समिति के अध्यक्ष के रूप में तथा केरल विश्वविद्यालय की मानविकी अनुसंधान नैतिकता समिति के अध्यक्ष के रूप में अपनी सराहनीय सेवा अर्पित कर रहे हैं।

**'जनकीय न्याय सभा'** न्यायमूर्ति हरिहरन नायर जी के निस्वार्थ एवं निर्मल मन की उपज है जिसकी संकल्पना और स्थापना में नायर जी की मानवीयता का साक्षात् दर्शन होता है। आम जनता की भालाई लिए ही उन्होंने इस सभा की स्थापना की है जिसमें ग्राम-पचायतों, नगरपालिकाओं और निगमों में विवादों का त्वरित, नि:शुल्क और सौहार्दपूर्ण निपटान होता है। साधारण जनता केलिए यह एक आश्वासन ही है। न्यायिक क्षेत्र में अपनी दीर्घकालीन सेवा से संप्राप्त संज्ञान और अनुभव ने ही इस प्रकार की सभा की स्थापना की प्रेरणा उन्हें दी है। वस्तुतः नायर जी के द्वारा केरल में संस्थापित यह **'जनकीय न्याय सभा'** दूरगामी स्तर पर संपूर्ण राष्ट्र केलिए ही आदर्श और अनुकरणीय है।

न्यायिक क्षेत्र के अलावा समाज के अन्य क्षेत्रों के लिए भी हरिहरन नायर जी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। **केरल गांधी स्मारक निधि** के सलाहकार एवं 'सामाजिक सद्भाव हेतु गांधीवादी पहल अभियान' के अध्यक्ष के रूप में नायर जी विशिष्ट सेवा अदा कर रहे हैं। उससे जुड़े सभी कार्यों में हरिहरन नायर जी के गांधीवादी व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप प्रकट होती है। सत्य, अहिंसा आदि पर उनकी अटल आस्था है। 'सादा जीवन और उच्च विचार' ही उनका आदर्श है।

जबसे न्यायमूर्ति हरिहरन नायर जी ने केरल हिंदी साहित्य अकादमी के संरक्षक का दायित्व ग्रहण किया तबसे उनसे जुड़कर कार्य करने का सुयोग मुझे प्राप्त हुआ। केरल के महान हिंदी सेवी आचार्य पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी द्वारा तिरुवनंतपुरम में संस्थापित संस्था है केरल हिंदी साहित्य अकादमी। उसके स्थापक अध्यक्ष डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जी का शिष्यत्व ग्रहण करने का सौभाग्य उन्हें महात्मा गांधी महाविद्यालय में प्राप्त हुआ था। वर्षों बाद पूर्व छात्र संघ के सम्मेलन के दौरान न्यायमूर्ति हरिहरन नायर जी अपने गुरुवर से महात्मागाँधी महाविद्यालय में, फिर से मिले थे। अपने गुरुवर के स्नेहानुरोध को शिरोधार्य करके हरिहरन नायर जी अकादमी के संरक्षक बने। अकादमी के

विविध कार्यकलापों में आवश्यक मार्गदर्शन देने में वे सदा सर्वदा जागरूक रहते हैं। संप्रति इन पंक्तियों की लेखिका तथा आचार्य चन्द्रशेखरन नायर जी की शिष्या अकादमी की अध्यक्षा हैं तथा डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जी की सुपुत्री डॉ.एस.सुनंदा अकादमी की महासचिव हैं।

अपनी मातृभाषा मलयाळम की भांति भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति भी न्यायमूर्ति हरिहरन नायर जी की अटल आस्था है। मलयाळम, अंग्रेज़ी तथा हिंदी के वे अच्छे लेखक भी हैं। उनके कई लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। 'नीति पर्वम' तथा 'नीति नियोगङ्ङळ्' मलयाळम में प्रकाशित उनके ग्रंथ हैं। केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका में भी उनके आलेख प्रकाशित हैं। वे एक कुशल संपादक भी हैं। भाषा, साहित्य, संस्कृति आदि के उपासक हरिहरन नायर जी का उदात्त रूप उनके आलेखों में दर्शित होता है।

न्यायमूर्ति हरिहरन नायर जी सच्चे अर्थ में मानवीयता की प्रतिमूर्ति हैं। स्नेह, दया, करुणा, सहानुभूति जैसे मानवीय तत्व उनमें कूट-कूट कर भरे हैं। श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों को वे महत्वपूर्ण स्थान देते हैं, स्वयं उनका पालन करते हैं और दूसरों को महान् जीवन मूल्यों को जकड़ कर पकड़ने की प्रेरणा भी देते हैं।

कुछ साल पूर्व की एक घटना याद आ रही है। तिरुवनंतपुरम में कार्यरत 'पन्तळीयम्' नामक सौहार्द-संगठन के वार्षिक समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में न्यायमूर्ति हरिहरन नायर जी पधारे थे। उस सम्मेलन में केरल के विख्यात पर्वतारोही शेख हसन खान का अभिनंदन कार्यक्रम भी था। भारत तथा अन्य विभिन्न महाद्वीपों की सब के ऊँची चोटियों पर तिरंगा फैलानेवाले केरल के पंतळम निवासी साहसी युवक हैं शेख हसन खान। अभिनंदन कार्यक्रम के बाद अपने वक्तव्य में हसन खान ने संसार के अन्यान्य पर्वत श्रृंगों को भी जीतने और वहाँ भी भारतीय तिरंगा झंडा फहराने की अपनी मनोकामना प्रकट की। अपने आर्थिक अभाव की ओर संकेत भी किया। उसी वक्त न्यायमूर्ति जी ने उनके साहसिक कार्यों पर अभिभूत होकर उस युवक को प्रोत्साहनार्थ एक लाख रुपये देने की घोषणा की। उपस्थित सारे सदस्यों ने तालियाँ बजाकर उस घोषणा की तारीफ की। अगले दिन हसन खान न्यायमूर्ति जी के निवास गये और शत-शत शुक्रिया अदा करते हुए एक लाख रुपये का चेक स्वीकार कर लिया। इस प्रकार के कितने ही अवसर हैं जब न्यायमूर्ति जी ने अशरणों और असहायों की मदद की है।

न्यायमूर्ति हरिहरन नायर जी का पारिवारिक जीवन भी सुख और शांतिपूर्ण है। नायर जी के सभी कार्यों में उनका पूरा समर्थन करती हुई उनकी अर्धांगिनी साथ हैं। वस्तुतः नायर जी के जीवन की समस्त सफलताओं के पीछे उनकी अर्धांगिनी का अहं योगदान है। कई अनौपचारिक अवसरों पर उस सरल, शालीन भद्र महिला से मिलने और बातें करने का मौका मुझे मिला है।

व्यक्ति और समाज के बहुविध उत्थान हेतु आज भी हरिहरन नायर जी तन-मन-धन से सेवारत हैं। उनके ऐसे सेवाकार्यों के लिए वे कई बार सम्मानित और पुरस्कृत भी हुए हैं। यही चाह है कि राष्ट्र स्तरीय उच्च पुरस्कार उन्हें प्राप्त हो जाए। समर्पित जन सेवी और राष्ट्रसेवी नायर जी स्वस्थ रहें, सानंद रहें, दीर्घायु रहें, सतत सक्रिय रहें, यही मनोकामना है, भगवान से प्रार्थना भी।

**पूर्व प्रोफसर एवं अध्यक्षा, हिंदी विभाग &**
**पूर्व डीन, प्राच्य अध्ययन संकाय**
**केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम।**
**अध्यक्षा, केरल हिंदी साहित्य अकादमी।**

पद्मश्री डॉ. अश्वति तिरुनाल गौरी लक्ष्मी बाई तंपुराट्टि द्वारा केरल हिन्दी साहित्य अकादमी समारोह का उद्घाटन करते हुए

प्रो.(डॉ.) एन. चंद्रशेखरन नायर जी का सम्मान करते हुए केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के संरक्षक न्यायमूर्ति श्री. एम.आर. हरिहरन नायर

# अप्पा एम.आर.हरिहरन नायर

**डॉ.आशा देशमुख**

सबसे पहले, मैं आपका धन्यवाद करना चाहती हूँ कि आपने मुझे इस अद्भुत व्यक्तित्व के बारे में कुछ शब्द लिखने का सम्मान दिया।

ईमानदार, सामाजिक रूप से ज़िम्मेदार, स्नेही, हास्यप्रिय, कुछ शब्द हैं जो मेरे मन में आती हैं जब मैं उनके बारे में सोचती हूँ, जो मेरे लिए पिता समान हैं।

मैं उनसे पहली बार पालियम इंडिया में मिली थी, जब उनके भाई डॉ.राजगोपाल, जो पालीएटिव केयर में मेरे मार्गदर्शक हैं, उनके बारे में स्नेहपूर्वक बात किया करते थे। विशेष रूप से उनके स्वस्थ खान-पान और रोज़ाना योग करने की आदत का उल्लेख होता था, जो उनके युवा दिखने का रहस्य है।

मुझे याद है कि हम कितनी सहजता से दोस्त बन गए थे, जब हम एक साझा मित्र की बेटी की शादी में मिले।

न्यायमूर्ति हरिहरन नायर, जिनके पास वर्षों का समृद्ध और विविध न्यायिक अनुभव है, उतने ही विनम्र और हँसमुख भी हैं कि उन्होंने मंच पर मेरे साथ नृत्य करने के लिए सहर्ष हामी भर दी!

उसके बाद हम बहुत अच्छे मित्र बन गए और हमारे बीच प्रेम और सम्मान का गहरा संबंध बन गया। मैं उन्हें 'अप्पा' और उनकी सुंदर पत्नी को 'अम्मा' कहकर पुकारती थी, उनके लिए मैं उनकी 'मोल' थी। यह एक दुर्लभ कहानी है कि आत्माएँ दूरी के बावजूद एक-दूसरे को पहचान लेती हैं।

हम दोनों की आध्यात्मिकता और सामाजिक सेवा में समान रुचि थी, और अप्पा के पास कई कहानियाँ थीं जिन्हें मैं बड़ी उत्सुकता और रुचि से सुनती थी - फर्श पर बैठकर, उन्हें बचपन से लेकर अभी तक के किस्से सुनाते हुए देखना मेरे लिए बेहद मुख्य था।

मैं हमेशा त्रिवेंद्रम आने का इंतजार करती थी, जो जल्द ही मेरा दूसरा घर बन गया। उनके द्वारा मुझ पर बरसाया गया स्नेह अमूल्य और अवर्णनीय था, जब मैं उनके और अम्मा के साथ कई मंदिरों, उनके बचपन के घर, विऴिञ्ञम पोर्ट, शंकुंमुखम समुद्र तट के दर्शन और होटल आर्य भवन में रात्रिभोज करती थी।

हालाँकि मैं दूसरे राज्य में रहती थी, फिर भी उनके रोज़मर्रा जीवन का हिस्सा थी, जैसे वे मेरे जीवन का हिस्सा थे। हम तकनीक और व्हाट्सऐप के आभारी थे, जिसने हमें रोज़ संपर्क में रहने में मदद की।

जो कोई भी अप्पा और अम्मा को जानता है, उन्हें पता है कि अम्मा उनके जीवन का प्रेम हैं, और उनके बीच की मित्रता ऐसी है जिससे युवाओं को सीख लेनी चाहिए।

"तंकम" कहकर वे उन्हें पुकारते हैं, और यह किसी का भी दिल पिघलाने के लिए काफी है!

मैं भाग्यशाली रही हूँ कि मैंने उनके साथ हँसी, गले लगी। कहानियाँ सुनी, भोजन, फिल्में और शादियाँ में साझा कीं।

कुछ बेटियाँ अपने पिता के दिल से प्रेम के धागों से बंधी होती हैं, भले ही उनका आनुवंशिक संबंध न हो!

मैं ऐसी ही एक मिसाल हूँ।

मैं अप्पा (और अम्मा) के लिए स्वस्थ, सुखी और दीर्घ जीवन की कामना करती हूँ, और उनके पोते से मिलने ऑस्ट्रेलिया तथा मेरे घर नासिक की आनंदमय यात्रा के लिए शुभकामनाएँ देती हूँ।

जन्मदिन मुबारक हो, अप्पा

आपकी 'मोल',

**डॉ.आशा देशमुख,**

**कन्सल्टेंट डॉक्टर नईन पेर्ल्स हॉस्पिटल, नासिक**

जस्टिस श्री. एम. आर. हरिहरन नायर और उनकी पत्नी श्रीमती पार्वती देवी के साथ डॉ. आशा देशमुख

अंग्रेज़ी से अनूदित

# न्याय, मानवता और लोकसेवा केलिए समर्पित व्यक्तित्व – माननीय न्यायमूर्ति श्री एम. आर. हरिहरन नायर

डॉ. एस. सुनंदा

माननीय न्यायमूर्ति श्री एम.आर.हरिहरन नायर सर के 85वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर उनके बारे में कुछ शब्द लिखना मेरे लिए अत्यंत गौरव, सौभाग्य और हर्ष का विषय है।

मुझे विशेष गर्व का अनुभव हो रहा है कि केरल हिंदी साहित्य अकादमी को उनके सम्मान में केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका अभिनंदन विशेषांक प्रकाशित करने का पावन अवसर प्राप्त हुआ है। यह विनम्र समर्पण केवल उनके जीवन की एक उल्लेखनीय उपलब्धि का उत्सव नहीं है, बल्कि उस महान व्यक्तित्व के प्रति हमारी गहन कृतज्ञता और आदर की अभिव्यक्ति भी है, जिनका सम्पूर्ण जीवन न्याय, विनम्रता, विद्वत्ता तथा निःस्वार्थ सामाजिक सेवा की प्रेरणादायी यात्रा रही है।

माननीय न्यायमूर्ति श्री एम.आर.हरिहरन नायर सर का गौरवपूर्ण जीवन सत्यनिष्ठा, समर्पण और मानव कल्याण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का उज्ज्वल उदाहरण है। निर्धनों को निःशुल्क विधिक सहायता प्रदान करने वाले एक अधिवक्ता के रूप में अपने प्रारम्भिक जीवन से लेकर एक प्रतिष्ठित न्यायाधीश, स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के लोकायुक्त, मध्यस्थ, विधि-सुधारक तथा सामाजिक दूरद्रष्टा के रूप में उनकी प्रत्येक भूमिका न्याय और नैतिक मूल्यों के प्रति उनके असाधारण समर्पण को प्रतिबिम्बित करती है।

11 मई 1941 को तिरुवनंतपुरम् जिले के मुट्टाकॉट में जन्मे न्यायमूर्ति सर बचपन से ही मेधावी छात्र रहे। उन्होंने महात्मा गाँधी कॉलेज में अध्ययन किया तथा केरल विश्वविद्यालय से भौतिक शास्त्र में स्नातक उपाधि प्राप्त की। वर्ष 1967 में साक्ष्य अधिनियम और भारतीय दण्ड संहिता में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर उन्हें विश्वविद्यालय का प्रतिष्ठित 'मळ्ळूर गोविंद पिळ्ळै स्वर्ण पदक' प्रदान किया गया। उनमें प्रतिभा के साथ सदैव विनम्रता और करुणा भी जुड़ी रही - यही गुण आज भी उनके व्यक्तित्व की पहचान हैं।

उनका न्यायिक जीवन अत्यंत उत्तरदायित्वपूर्ण और गौरवशाली रहा। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश, सीबीआई विशेष न्यायाधीश, उच्च न्यायालय, केरल के रजिस्ट्रार (विजिलेंस) तथा बाद में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में उन्होंने साहस, निष्पक्षता और मानवीय संवेदनाओं के साथ न्यायपालिका के सर्वोच्च आदर्शों को प्रतिष्ठित किया। किंतु उन्हें वास्तव में विशिष्ट बनाने वाला घटक केवल उनके द्वारा सुशोभित उच्च पद नहीं, बल्कि प्रत्येक उत्तरदायित्व के निर्वहन में उनका मानवीय दृष्टिकोण है।

उच्च न्यायालय से सेवानिवृत्ति के पश्चात भी न्यायमूर्ति सर ने समाज-सेवा से कभी विराम नहीं लिया। विधिक सेवा, मध्यस्थता, नैतिकता समितियाँ, कारागार सुधार, गांधीवादी पहल, परोपकारी संस्थाएँ तथा सामुदायिक विवाद-निवारण की अभिनव व्यवस्थाएँ उनकी सतत सक्रियता, असीम ऊर्जा और मिशनरी भावना का निदर्शन है। उनकी अभिनव पहल "जनसा – जनकीय न्याय सभा" जन-सुलभ, करुणामय और लोक-केंद्रित न्याय के प्रति उनकी दूरदर्शी प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

न्यायमूर्ति श्री हरिहरन नायर सर ने अपने भ्राता डॉ.राजगोपाल द्वारा प्रारंभित एवं संचालित भारतव्यापी सामुदायिक प्रशामक देखभाल संस्था पैलियम इंडिया के कार्यों में भी सक्रिय योगदान दिया है।

हम सभी के लिए 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी' में न्यायमूर्ति श्री हरिहरन नायर सर को संरक्षक के रूप में पाना अत्यंत गर्व और सौभाग्य का विषय है। अकादमी से उनका संबंध केवल औपचारिक या संस्थागत नहीं, बल्कि अत्यंत आत्मीय, भावनात्मक और आध्यात्मिक है।

न्यायमूर्ति सर मेरे पूज्य पिताजी, पद्म श्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी जो केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष थे, के अत्यंत प्रिय शिष्य रहे। दोनों का संबंध भारतीय गुरुशिष्य का था। मेरे पिता न्यायमूर्ति सर के प्रति अत्यंत सम्मान रखते थे तथा उन्हें अकादमी की गतिविधियों से स्नेहपूर्वक जोड़कर रखते थे। बदले में न्यायमूर्ति सर ने भी अपने गुरु के प्रति अपार श्रद्धा और कृतज्ञता के साथ वर्षों तक अकादमी से सक्रिय रूप से जुड़े रहकर अपनी निष्ठा व्यक्त की।

पिछले दो दशकों से मैं बड़े आदर और प्रसन्नता के साथ यह देखती आ रही हूँ कि केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का शायद ही कोई कार्यक्रम न्यायमूर्ति सर की गरिमामयी उपस्थिति के बिना सम्पन्न हुआ हो। चाहे वह महासभा की बैठक हो, कार्यकारिणी समिति की बैठक, हिंदी सप्ताह समारोह, अकादमी का वार्षिकोत्सव अथवा कोई साहित्यिक आयोजन — अपनी असंख्य व्यस्तताओं और अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं में सक्रिय सहभागिता के बावजूद वे सदैव पूरे उत्साह और आत्मीयता के साथ सम्मिलित होते रहे हैं।

हम सबके लिए वे केवल नाममात्र के संरक्षक नहीं, बल्कि वास्तव में हर अर्थ में "संरक्षक" हैं।

जो बात मुझे सदैव सर्वाधिक प्रेरित करती है, वह है उनकी अद्भुत सादगी और विनम्रता। न्यायपालिका के सर्वोच्च पदों को सुशोभित करने तथा अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं में सम्मानित दायित्व निभाने के बावजूद वे अत्यंत सहज, आत्मीय और अहंकार से पूर्णतः रहित हैं। उनका मुस्कुराता चेहरा, शांत स्वभाव और प्रसन्नचित्त व्यक्तित्व सभी को सहज बना देता है।

न्यायमूर्ति सर में धैर्यपूर्वक सबकी बातें सुनने और प्रत्येक समस्या का विचारपूर्ण समाधान देने की अद्भुत क्षमता है। वे अत्यंत व्यवस्थित, अनुशासित, सौम्य और सतत सक्रिय हैं। उनकी सकारात्मकता और उत्साह संक्रामक हैं। चौरासी वर्ष की आयु में भी वे युवा ऊर्जा, स्फूर्ति और आशावाद से ओत-प्रोत दिखाई देते हैं। उनका अनुशासित जीवन, नियमित भ्रमण, योगाभ्यास तथा समाज के साथ सतत सक्रिय जुड़ाव ही संभवतः उनके व्यक्तित्व की इस गरिमा और जीवन्तता का रहस्य है।

उतनी ही प्रशंसनीय है उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती देवी दीदी के साथ उनकी सुंदर जीवन-संगति। सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों में मैंने उन्हें सदैव साथ-साथ देखा है — प्रसन्न, स्नेहपूर्ण और एक-दूसरे के प्रति पूर्ण सहयोगी। उनका दाम्पत्य जीवन परस्पर सम्मान, सादगी और प्रेम का प्रेरणास्पद उदाहरण है। वे वास्तव में एक-दूसरे के लिए ही बने हैं।

न्यायमूर्ति हरिहरन नायर सर का जीवन हमें यह शिक्षा देता है कि महानता केवल उच्च पद प्राप्त करने में नहीं, बल्कि उन उपलब्धियों के बावजूद मानवीय, करुणामय और समाज-समर्पित बने रहने में निहित है। उनका जीवन इस सत्य का सजीव उदाहरण है कि ज्ञान, बुद्धिमत्ता और अधिकार को विनम्रता, संवेदनशीलता और सेवा-भाव के साथ किस प्रकार समन्वित किया जा सकता है।

न्यायमूर्ति श्री एम.आर.हरिहरन नायर सर के सम्मान में इस अभिनंदन अंक के प्रकाशन के पावन अवसर पर मैं उस विराट व्यक्तित्व को अपनी आदरपूर्ण वंदना अर्पित करती हूँ, जो अपने विशाल ज्ञान, विवेक, मार्गदर्शन और श्रेष्ठ कर्मों के माध्यम से समाज को निरंतर सशक्त बना रहे हैं।

ईश्वर करे कि उनका अमूल्य योगदान समाज को समृद्ध करते रहे, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी को निरंतर सुदृढ़ बनाता रहे तथा देश-विदेश की युवा पीढ़ियों को प्रेरित करता रहे। वे उत्तम स्वास्थ्य, प्रसन्नता और शक्ति के साथ अनेकानेक वर्षों तक मानवता की सार्थक सेवा करते रहें।

अपने कर्मठ जीवन में उन्हें अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित और पुरस्कृत किया गया है। मेरी हार्दिक कामना है कि विधि, न्याय, नैतिकता और सामाजिक समरसता के क्षेत्र में उनके महान योगदान के अनुरूप उन्हें भविष्य में भी अनेक प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त होते रहें।

मैं उनकी उस महान पहल की भी हार्दिक सफलता की कामना करती हूँ, जिसके माध्यम से वे विधिक सेवा प्राधिकरण तथा स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के सहयोग से वैकल्पिक विवाद निवारण तंत्र को संस्थागत और व्यापक बनाने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि सामान्य नागरिकों के लिए न्याय अधिक मानवीय, सुलभ और सार्थक बन सके।

ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वे न्यायमूर्ति सर पर अपनी अनुकम्पा बनाए रखें तथा आने वाले अनेक वर्षों तक उनके सभी श्रेष्ठ प्रयासों को सफल बनाते रहें।

आदर और कृतज्ञता सहित।

**महासचिव**
**केरल हिंदी साहित्य अकादमी**

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका का प्रकाशन - 28 दिसंबर 2025

अंग्रेज़ी से अनूदित

# आभार

**न्यायमूर्ति श्री. एम. आर. हरिहरन नायर**
**अनुवाद – डॉ. सी. जे. प्रसन्नकुमारी**

पचासी के रंग में आज खडा हूँ मैं
आप लोगों से यही कहने को बाकी है
शुभाशंसा केलिए कोटि कोटि आभार ।
केरल हिंदी साहित्य अकादमी का यह स्नेहादर,
संतुष्ट है मेरा मनमानस ।

उम्र बनी सिर्फ एक संख्या, आत्मबल की चमक दमक में
'आधा स्वयं अपना दूसरा आधा देगा सर्वेश्वर' यह कविवचन
अपना आधा दिया मैं ने, निर्लोभ दूसरा आधा बरसाया सर्वेश्वर ने ।
विश्वनियंता ने दिखाया पथ निशंक चल पड़ा उसी पथ पर मैं
आ गयी विजय एक एक के निर्देश मिला सारोपदेशमय
स्वस्थ शरीर में बसता है स्वस्थ मन, भोजन औषध-सा,
रोज़ का व्यायाम, गतिशील संधियाँ, जागरित ग्रंथियाँ,
प्राणवायु ताल में हो, स्वस्थ मन तो
सेहत पक्का, जीवन बनेगा आनंदमय ।

ज्ञान मोह प्रज्वलित रहे नित्य पठन-पाठन है ज्ञानवर्द्धक
सर्जना, हवा खाना, प्रभात फेरी, सौहृद संवाद सदा बनाये रखें
आलस्यरहित जीवन, ज़रूरी विश्राम, हो बीच में ज्ञान यात्रायें
भलाई करेंगी तो आयेगी खुशी, मिलेगी बडी मात्रा की संतृप्ति ।

अकादमी के सौहृद वलय, प्रदान की बडी मानसिक तृप्ति
अनेक सम्मेलन, चर्चाएँ, ज्ञानमय संवाद
पिता की इच्छा की पालिका पुत्री सुनंदा का सेवा भाव
अकादमी की अध्यक्षा तंकमणि टीच्चर है मिसाल
गुरु चन्द्रशेखरन सर की यादें रहे चिरस्थायी
निस्वार्थ सेवा भाव से अनेक प्राध्यापक वृन्द
आगे बढें हम एक साथ भाषा प्रगति के लक्ष्य हेतु
श्रेष्ठ संस्थापक का स्वप्न साक्षात्कार
एकजुट होकर हासिल करें हम ।

*मलयाळम से अनूदित*

## स्मृति चिह्न

# न्यायमूर्ति श्री एम. आर. हरिहरन नायर : जीवन रेखा

**न्यायमूर्ति श्री एम. आर. हरिहरन नायर**
(पूर्व न्यायाधीश, केरल उच्च न्यायालय)
पारिजातम्, डीईएसआरए-97,
पेरुन्तान्नि, तिरुवनंतपुरम् – 695008, केरल
ई-मेल : justicemr@gmail.com
मोबाइल : 7907921419, दूरभाष : 0471-2451451

---

## व्यक्तिगत विवरण

न्यायमूर्ति श्री एम.आर.हरिहरन नायर का जन्म 11 मई 1941 को केरल राज्य के तिरुवनंतपुरम् जिले के मुट्टक्काट् में हुआ। उनकी अपनी स्कूली शिक्षा तिरुवनंतपुरम् जिले के वेंङ्ङानूर हाई स्कूल में हुई। महाविद्यालयीन शिक्षा तिरुवनंतपुरम् के महात्मा गांधी कॉलेज में संपन्न हुई तथा केरल विश्वविद्यालय से भौतिकी विषय में स्नातक उपाधि प्राप्त की।
वर्ष 1967 में साक्ष्य अधिनियम (Evidence Act) तथा भारतीय दण्ड संहिता (Indian Penal Code) में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के लिए उन्हें केरल विश्वविद्यालय का प्रतिष्ठित "मळ्ळूर गोविन्द पिळ्ळै स्वर्ण पदक" प्रदान किया गया।

## अधिवक्ता एवं न्यायिक सेवा

### अधिवक्ता

- वर्ष 1967 से 1975 तक तिरुवनंतपुरम् जिला न्यायालय में अधिवक्ता के रूप में विधि-व्यवसाय किया।
- इस अवधि में अनेक निर्धन एवं वंचित व्यक्तियों को निःशुल्क विधिक सहायता प्रदान की।

### न्यायिक सेवा

- वर्ष 1975 में राज्य में प्रथम रैंक प्राप्त कर मुनसिफ के रूप में चयनित हुए।
- केरल राज्य न्यायिक सेवा में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया, जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं—

### *प्रमुख दायित्व*

- तलश्शेरी, कोट्टयम तथा एर्नाकुलम में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश।
- वर्ष 1983–1985 के दौरान प्रतिनियुक्ति पर भारतीय खाद्य निगम (Food Corporation of India) में केरल एवं कर्नाटक राज्यों के विधि अधिकारी (उप प्रबंधक – विधि) के रूप में कार्य।
- वर्ष 1987–1990 तक एऱणाकुळम में सी.बी.आई. विशेष न्यायाधीश।
- वर्ष 1992–1993 के दौरान केरल राज्य सहकारी अधिकरण (Kerala State Co-operative Tribunal) में सहकारी संस्थाओं से संबंधित अपीलों की सुनवाई करने वाले न्यायाधीश।
- वर्ष 1990–1991 में तलश्शेरी, 1995–1998 में कोट्टयम तथा 1999 के एक भाग में एऱणाकुळम में प्रधान जिला न्यायाधीश।

इन अवधियों में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने निर्धनों को विधिक सहायता प्रदान करने हेतु अनेक विधिक साक्षरता शिविरों का आयोजन किया तथा कारागारों का निरीक्षण कर विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रम संचालित किए।

- वर्ष 1998–1999 में केरल उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार (विजिलेंस) के रूप में न्यायिक अधिकारियों तथा उच्च न्यायालय के अधिकारियों के विरुद्ध प्राप्त शिकायतों की गोपनीय जाँच का दायित्व निभाया।
- वर्ष 1999 में केरल राज्य परिवहन अपीलीय अधिकरण (Kerala State Transport Appellate Tribunal) में मोटर वाहन अपीलों की सुनवाई करने वाले एकमात्र न्यायाधीश के रूप में कार्य किया।

## उच्च न्यायालय में नियुक्ति

- 1 मार्च 1999 को केरल उच्च न्यायालय के अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त हुए।
- 31 अगस्त 2000 को स्थायी न्यायाधीश बने।

## सेवानिवृत्ति उपरान्त गतिविधियाँ (2003–2024)

### विधिक एवं न्यायिक सेवाएँ

- वर्ष 2003–2004 के दौरान केरल उच्च न्यायालय विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आयोजित लोक अदालतों में स्वैच्छिक एवं मानद मध्यस्थ (Mediator) के रूप में सेवाएँ प्रदान कीं।
- वर्ष 2004–2006 के दौरान केरल राज्य कारागार पुनरीक्षण समिति (Kerala State Prison Review Committee) के अध्यक्ष रहे।

### नैतिकता समितियों में सेवाएँ

- वर्ष 2004–2014 तक श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (SCTIMST) की संस्थागत नैतिकता समिति के मानद अध्यक्ष रहे। इस समिति का कार्य मानव परीक्षण से संबंधित औषधीय एवं शोध परियोजनाओं का परीक्षण एवं अनुमोदन करना था।
- वर्ष 2014 से केरल स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय की विश्वविद्यालय नैतिकता समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत।
- मानव सहभागिता वाले अनुसंधानों के लिए केरल विश्वविद्यालय की विश्वविद्यालय स्तरीय नैतिकता समिति के अध्यक्ष।

### सामाजिक सेवा

- वर्ष 2006–2008 के दौरान 'TRAAC' नामक एक शीर्ष संगठन की स्थापना की, जो त्रिक्काक्करा नगरपालिका की 40 से अधिक निवासी संघों के लिए कार्यरत था। इसके संस्थापक अध्यक्ष के रूप में समाज को निःशुल्क सेवाएँ प्रदान कीं।

### स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के लोकायुक्त (Ombudsman)

- वर्ष 2008–2011 तक केरल की स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के लोकायुक्त रहे।
- इस अवधि में अनेक महत्वपूर्ण सुधार लागू किए, जिनमें—
- सभी आदेश मलयाळम भाषा में जारी करना।
- पक्षकारों एवं अधिवक्ताओं के लिए दो-दो घंटे के निश्चित समय-खंड निर्धारित करना।
- वेबसाइट पर अग्रिम सूचना उपलब्ध कराकर न्यायालय में पूरे दिन प्रतीक्षा करने की आवश्यकता को समाप्त करना।
- सर्वाधिक संख्या में स्वतः संज्ञान (Suo Motu) मामले दर्ज करना।
- बिना शिकायत प्राप्त हुए भी जनहित में अनेक आदेश पारित करना।
- उनकी उत्कृष्ट सेवाओं की सराहना करते हुए New Indian Express ने 26 सितम्बर 2009 को "Appreciating an Om-budsman" शीर्षक से संपादकीय प्रकाशित किया।

### सेवानिवृत्ति के पश्चात केरल सरकार के अंतर्गत दायित्व

- उच्च न्यायालय स्तरीय विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आयोजित लोक अदालतों में स्वैच्छिक मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हुए अनेक लोगों की विधिक समस्याओं का स्थायी समाधान कराया।
- विभिन्न सरकारी कंपनियों से संबंधित अनेक मामलों में मध्यस्थ (Arbitrator) के रूप में कार्य किया।

### विभिन्न संस्थाओं में संरक्षक एवं सलाहकार

- केरल गांधी स्मारक निधि, गांधी भवन, तिरुवनंतपुरम्।
- केरल हिंदी साहित्य अकादमी, पट्टम, तिरुवनंतपुरम्।
- पेनुएल फाउंडेशन, चालक्कुटी, त्रिशूर।
- नन्मा चैरिटेबल ट्रस्ट, आलप्पुळा।
- अभिजित फाउंडेशन, तिरुवनंतपुरम्।
- नाफो ग्लोबल, कळक्कूट्टम, तिरुवनंतपुरम्।
- 3S एंड आवर हेल्थ सोसायटी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, एर्नाकुलम।

### गांधीवादी सामाजिक समरसता अभियान

- केरल गांधी स्मारक निधि के सलाहकार।
- "गांधीयन इनिशिएटिव फॉर सोशल हार्मनी" के अध्यक्ष।
- उन्होंने केरल विधिक सेवा प्राधिकरण के सहयोग से वेंगानूर ग्राम पंचायत, पिऱवम् नगरपालिका तथा कोच्चि निगम में मासिक लोक अदालतों के माध्यम से विवाद समाधान हेतु "जनसा (जनकीय न्याय सभा)" की परिकल्पना की और उसे व्यवहार में उतारा।
- वर्तमान में वे इस व्यवस्था को केरल की सभी पंचायतों, नगरपालिकाओं और नगर निगमों तक विस्तारित करने के लिए प्रयासरत हैं।

### प्रकाशित कृतियाँ

### लेखक के रूप में

1. नीति पर्वम् (मलयाळम आत्मकथा) – 2012
   पूर्णा पब्लिकेशन्स, कोऴिक्कोट्
2. नीति नियोगंगल (मलयाळम) – 2021
   पुण्यदर्शनम् बुक्स, करुकच्चाल, कोट्टयम
3. मलयाळम दैनिक समाचार-पत्रों, साप्ताहिक पत्रिकाओं तथा विधि-पत्रिकाओं में अनेक लेख प्रकाशित।

### संशोधित संपादक (Revising Editor)

1. Mulla's Transfer of Property Act – 12वाँ संस्करण (2015), Lexis Nexis
2. Krishna Murthy's Indian Stamp Act – 12वाँ संस्करण (2017), Lexis Nexis

### विशिष्ट योगदान

भारत में न्यायिक विवादों के समाधान में अत्यधिक विलंब और असहनीय व्यय एक गंभीर समस्या है। न्यायमूर्ति हरिहरन नायर का मानना है कि महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित ग्राम स्वराज की अवधारणा में अधिकांश विवादों का समाधान समुदाय के बुद्धिमान एवं सम्मानित व्यक्तियों द्वारा आपसी समझौते और सुलह के माध्यम से किया जा सकता है।

विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम तथा सिविल प्रक्रिया संहिता की धारा 89 के अंतर्गत इस प्रकार की वैकल्पिक विवाद-निवारण व्यवस्था को विधिक मान्यता प्राप्त है। मध्यस्थों द्वारा दिया गया निर्णय न्यायालय के आदेश के समान प्रभावी होता है और उसके विरुद्ध सामान्यतः अपील का प्रावधान नहीं होता।

अपने दीर्घ अनुभव-जिला विधिक सेवा प्राधिकरणों के अध्यक्ष, स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के लोकायुक्त तथा केरल गांधी स्मारक निधि की गांधीवादी सामाजिक समरसता पहल के अध्यक्ष - के आधार पर उन्होंने एक व्यावहारिक मॉडल विकसित किया।

यह परियोजना 12 अक्टूबर 2024 को वेंगानूर ग्राम पंचायत में प्रारम्भ की गई। इसकी सफलता से प्रेरित होकर कोच्चि निगम ने इसे अपने सभी छह क्षेत्रीय कार्यालयों में लागू किया। "जनसा (जनकीय न्याय सभा)" का उद्घाटन 16 मार्च 2025 को कोच्चि निगम के छहों जोनल कार्यालयों में तथा 30 मई 2025 को पिऱवम नगरपालिका में किया गया।

अब इस परियोजना की सफलता के आधार पर केरल सरकार से अनुरोध किया जा रहा है कि इसे राज्य की सभी स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में लागू किया जाए तथा उन्हें केरल विधिक सेवा प्राधिकरण की संबंधित इकाइयों से जोड़ा जाए।

अंततः "जनसा" भारत के सभी नागरिकों के लिए (असमझौतायोग्य अपराधों को छोड़कर) दीवानी एवं आपराधिक विवादों के निःशुल्क समाधान का एक प्रभावी राष्ट्रीय मॉडल बन सकता है।

अंग्रेज़ी से अनूदित

# सम्मान एवं पुरस्कार

UNIVERSITY OF KERALA

Folio No....412...

CERTIFICATE

AWARD OF MEDALS AND PRIZES

This is to certify that Sri/Smt M. R. Hariharan Nayar has been awarded the Malloor Govinda Pillai Gold Medal for Law for the year 1967 for having secured the highest number of marks in Criminal Law from among the candidates who passed the B.L. Degree Examination held in April 1967

University Buildings,
Trivandrum,
Dated 6th November 1967

Registrar.

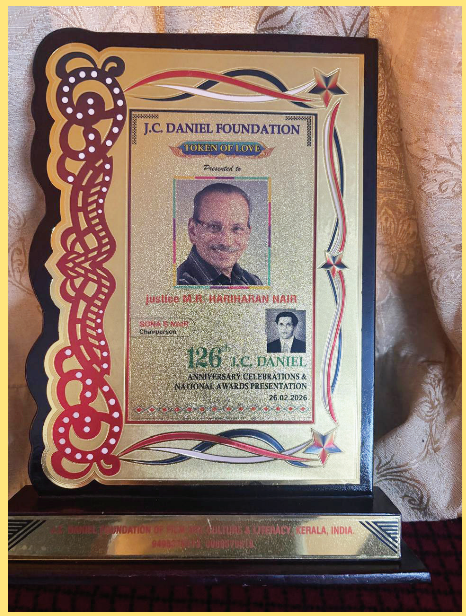

# सम्मान एवं पुरस्कार

विवाह के अवसर पर हरिहरन नायर जी और पत्नी पार्वती देवीजी अपने अपने माता-पिता के साथ

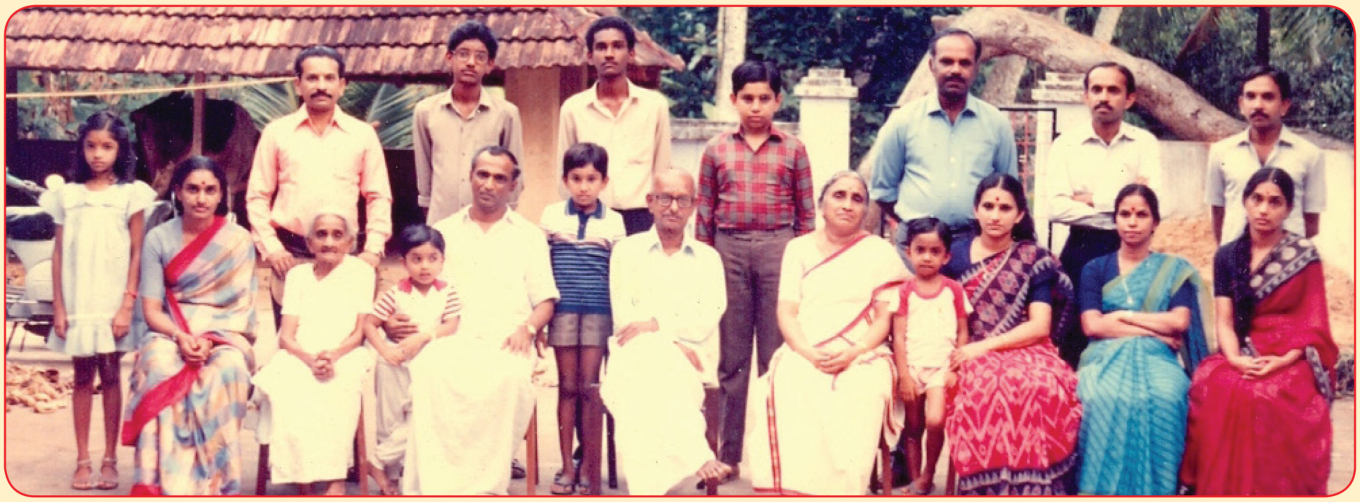

परिवार के साथ

डॉ. एन चन्द्रशेखरन नायर पद्मश्री पुरस्कार स्वीकार करते हुए। साथ है न्यायमूर्ति एम.आर. हरिहरन नायर जी, संरक्षक, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर जी प्रथम "डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार" डॉ. एस. रेणु को देते हुए (न्यायमूर्ति एम.आर. हरिहरन नायर जी उपस्थित हैं।)

न्यायमूर्ति एम.आर. हरिहरन नायर जी केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के 45 वें वार्षिक सम्मेलन में भाषण देते हुए।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी डी-1, लक्ष्मी नगर, पद्मश्री डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर रोड, पट्टम पालस पोस्ट, तिरुवनन्तपुरम 695004
के लिए शोध पत्रिका डॉ.एस. सुनन्दा, महासचिव द्वारा प्रकाशित और ले-औट & मुद्रण अक्षरा ऑफसेट, तिरुवनन्तपुरम